Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہ و نصلی علیٰ رسولہ الکریم وعلیٰ عبدہ المسیح الموعود

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3 | अंक 17

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 शअबान 1439 हिजरी कमरी 26 शहादत 1397 हिजरी शमसी 26 अप्रैल 2018 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا
اسۡتَعِيۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَالصَّلٰوةِ
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :149)

अनुवादः हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो (अल्लाह से) सब्र और नमाज़ के साथ सहायता मांगो। निस्संदेह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

जैसा कि फरिशते ने कहा था कि यह रोटी तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ के दरवेशों के लिए है ख़ुदा तआला मुझे और मेरे साथ के दरवेशों को हर रोज़ अपनी तरफ से दावत भेजता है अतः हर रोज़ नई दावत उस की, हमारे लिए एक नया निशान है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

120. एक सौ बीस वां निशान - अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के बारे में ख़ुदा ने मेरे लिए एक निशान प्रकट किया था। चूँकि इस निशान के प्रथम साक्षी मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब एडीटर अखबार 'बद्र' हैं। इसलिए उन्हीं के हाथ का लिखा पत्र नीचे लिखा जाता है और वह यह है :-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हज़रत अक़दस हमारे मुर्शिद और महदी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद वस्सलातो वस्सलाम अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बरकातोहू

मान्यवर मुझे जो कुछ मालूम है सेवा में प्रस्तुत करता हूँ और वह यह कि जब पुस्तक "उम्महातुल मोमिनीन" ईसाइयों की ओर से अप्रैल 1898 ई. में प्रकाशित हुई थी तो अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के सदस्यों ने सरकार में इस विषय का मैमोरियल भेजा था कि इस पुस्तक का प्रकाशन बन्द किया जाए तथा उसके लेखक से जिसने ऐसी गन्दी पुस्तक लिखी है उसकी पूछ-ताछ हो। उन दिनों में यह विनीत लाहौर में एकाउन्टेण्ट जनरल के कार्यालय में कर्मचारी था तथा दो-चार दिन के लिए किसी अवकाश पर क़ादियान आया हुआ था जबकि आपकी सेवा में उनके मैमोरियल की चर्चा की गई। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि आप बहुत से लोगों के साथ जिनमें हज़रत मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. भी थे बाग़ की ओर सैर करने जा रहे थे, तब आपने कहा कि यह बात अंजुमन ने ठीक नहीं की। हम इस मैमोरियल के कठोर विरोधी हैं। अतः आप ने इस विरोध को अपने एक पत्र में जो मैमोरियल के रूप में सरकार की सेवा में भेजा था। स्पष्ट तौर पर 4 मई 1898 ई. को प्रकाशित भी कर दिया था जिस पर अंजुमन वालों ने बहुत शोर मचाया तथा अख़बारों में आपके विरुद्ध लेख प्रकाशित किए। उन्हीं दिनों में जब आप सैर करने गए तो आपने कहा था कि हमें अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर की इस कार्यवाही के सम्बन्ध में इल्हाम हुआ है कि -

سَتَذۡکُرُوۡنَ مَاۤ اَقُوۡلُ لَکُمۡ ؕ وَ اُفَوِّضُ اَمۡرِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ

और उसके अनुवाद एवं समझने में आपने कहा कि शीघ्र ही अंजुमन वाले मेरी बात को स्मरण करेंगे कि इस उपाय को करने में असफलता है तथा जिस बात को हमने अपनाया है अर्थात् विरोधियों के आरोपों का खण्डन करना तथा उनका उत्तर देना। इस बात को ख़ुदा तआला को सौंपता हूँ अर्थात् ख़ुदा मेरे काम का रक्षक होगा किन्तु वह इरादा जो अंजुमन वालों ने किया है कि ''उम्महातुल मोमिनीन'' के लेखक दण्ड दिलाएं। इसमें उन्हें कदापि सफलता न होगी तथा बाद में उन्हें याद आएगा कि जो समय से पूर्व बताया गया था वह यथार्थ और उचित था। उस इल्हाम को सुनने के एक-दो दिन पश्चात् जब मैं वापस लाहौर गया तो मैं नियमानुसार मस्जिद गुम्टी बाज़ार लाहौर में एक जल्सा किया गया। उस जल्से में यह विनीत अपनी क़ादियान-यात्रा की रिपोर्ट सुना रहा था। अतः आपका यह इल्हाम और उसकी व्याख्या लोगों के बहुत बड़े समूह को सुनाई गई और अभी मैं सुना ही चुका था कि एक व्यक्ति ने सूचना दी कि अंजुमन को लेफ्टीनेन्ट गवर्नर की ओर से उत्तर आ गया है तथा उनका मैमोरियल अस्वीकृत हुआ है तथा कथित लेखक किसी कानून की पकड़ में नहीं आ सकता। अतः इस सूचना का सुनना समस्त उपस्थित लोगों के लिए ईमान में वृद्धि का कारण हुआ और सब ने ख़ुदा तआला के अद्भुत कार्यों पर उसकी प्रशंसा की।

(लेखक) आपकी जूतियों का दास - मुहम्मद सादिक़

121. एक सौ इक्कीस वां निशान - जिन दिनों में 4 अप्रैल 1905 ई. का भूकम्प आया था, उस समय चूँकि ख़ुदा तआला की ओर से मुझे सूचना मिली थी कि इसी भूकम्प पर बस नहीं और भी भूकम्प आएँगे। इसलिए मैं हित को दृष्टिगत रखते हुए परिवार तथा अपनी जमाअत के अधिकतर लोगों सहित बाग़ में चला गया था तथा वहां एक बड़े मैदान में दो तम्बू लगा कर हमें गुज़ारा करते थे। उन्हीं दिनों में मेरे घर के लोग बहुत बीमार हो गए थे। किसी समय भी ज्वर नहीं छोड़ता था तथा खांसी साथ थी। मेरे वफादार मित्र मौलवी हकीम नूरदीन साहिब उपचार करते थे किन्तु लाभ महसूस न होता था। नौबत यहाँ तक पहुँची उठने-बैठने से असमर्थ हो गई। चारपाई पर बैठाकर सायकाल स्त्रियाँ तम्बू में ले जाती थीं और प्रातःकाल चारपाई पर बाग़ में ले आती थीं। तथा दिन प्रतिदिन शरीर निर्बल होता जाता था। अन्ततः मैंने ध्यानपूर्वक दुआ की तब इल्हाम हुआ -

انّ معی ربّی سیھدین

अर्थात् मेरा रब्ब मेरे साथ है वह मुझे शीघ्र बता देगा कि रोग क्या है और उपचार क्या है। इस इल्हाम के कुछ मिनट पश्चात् ही मेरे हृदय में डाला गया कि यह रोग यकृत की गर्मी के कारण है तथा हृदय में डाला गया कि पुस्तक "शिफ़ाउल इस्लाम" का नुस्ख़ा इसके लिए लाभप्रद होगा। अतः वह नुस्ख़ा बनाया गया और वे गोलियाँ दीं। जब तीन चार गोलियाँ खाई गईं तो एक दिन प्रातः काल मैंने स्वप्न में देखा कि अब्दुर्रहमान नाम के एक व्यक्ति हमारे मकान में आया है और वह खड़ा होकर कहता है कि ज्वर टूट गया। ख़ुदा की यह अद्भुत शक्ति है कि एक ओर यह स्वप्न देखा गया तथा दूसरी ओर जब मैंने नाड़ी देखी ते ज्वर का नामोनिशान न था। फिर यह इल्हाम हुआ -

تو در منزل ما چو بار بار آئی
خدا ابر رحمت ببار یدیانے

इस भविष्यवाणी की भी एक जमाअत साक्षी है जिसकी इच्छा हो ज्ञात कर ले।

122. एक सौ बाईस वां निशान - तीस वर्ष के लगभग समय हुआ है कि एक बार मैंने स्वप्न में देखा कि एक ऊँचा चबूतरा है जो दूकान जैसा है और कदाचित उस पर छत भी है। उसमें एक अत्यन्त सुन्दर लड़का बैठे है जो लगभग सात वर्ष की आयु का था। मेरे हृदय में विचार आया कि यह फ़रिश्ता है। उसने मुझे बुलाया या मैं स्वयं गया यह याद नहीं परन्तु जब मैं उसके चबूतरे के पास जाकर खड़ा हुआ

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

सहाबा रिज़वानुल्लाह अजमईन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सीरत के उज्ज्वल सबूत हैं। जो सहाबा की कद्र नहीं करता वह हरगिज़ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान नहीं करता। सहाबा किराम वह पवित्र जमाअत थी जो अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कभी अलग नहीं हुए और आप के मार्ग में जान देने से भी संकोच नहीं करते थे न कभी किया था। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता में ऐसे खो गए कि वह इसके लिए प्रत्येक असुविधा और परेशानी उठाने को हर समय तैयार थे।

यह सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम का वह स्थान है जो प्रत्येक अहमदी अपने सामने रखना चाहिए। जब हम सहाबा की सीरत के बारे में पढ़ते हैं और उनके व्यावहारिक नमूने के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं तब ही उनका महत्त्वपूर्ण स्थान उभर कर सामने आता है और यह जो स्थान है यह हमें इस बात की ओर ध्यान दिलाने वाला होना चाहिए कि उनकी सीरत, उन का आदर्श, उनके काम, उनकी आज्ञाकारिता, उन के इबादत के स्तर हमारे लिए नमूना हैं और हम इन को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की कोशिश करें।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ सहाबा हज़रत अबु दुजानह अंसारी, हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा, हज़रत अबू अय्यूब अंसारी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा हज़रत मुआज़ और हज़रत माऊज़ रिज़वानुल्लाह अलैहिम के प्रशंसनीय गुणों का ईमान वर्धन उल्लेख।

आदरणीय अल्हाज इस्माइल बी.के.आडो साहिब आफ घाना (जो हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की उर्दू कक्षा में "बड़ा बच्चा" के नाम से प्रसिद्ध थे।) की वफात। मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 मार्च 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर सहाबा रिज़वानुल्लाह का स्थान बयान फरमाते हुए फरमाते हैं कि:

"सहाबा रिज़वानुल्लाह अजमईन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के उज्ज्वल सबूत हैं। अब कोई आदमी इन सबूतों को नष्ट करता है तो मानो वे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत को नष्ट करना चाहता है। अत: वही आदमी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा सम्मान कर सकता है जो सहाबा का सम्मान करता है। फरमाया कि " जो सहाबा का सम्मान नहीं करता वह हरगिज़ हरग़िज़ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान नहीं करता। वह इस दावा में झूठा है कि अगर कहे कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करता हूं। क्योंकि यह कभी नहीं हो सकता कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत हो और फिर सहाबा से दुश्मनी।"

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 278 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आप ने फरमाया कि " सहाबा किराम वह पवित्र जमाअत थी जो अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कभी अलग नहीं हुए और आप के मार्ग में जान देने से भी संकोच नहीं करते थे न कभी किया।"

फरमाते हैं "आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता में ऐसे खो गए कि वह इसके लिए प्रत्येक असुविधा और परेशानी उठाने को हर समय तैयार थे।"

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 277 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: यह सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम का वह स्थान है जो प्रत्येक अहमदी अपने सामने रखना चाहिए। जब हम सहाबा की सीरत के बारे में पढ़ते हैं और उनके व्यावहारिक नमूने के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं तब ही उनका महत्त्वपूर्ण स्थान उभर कर सामने आता है और यह जो स्थान है यह हमें इस बात की ओर ध्यान दिलाने वाला होना चाहिए कि उनकी सीरत, उन का आदर्श, उनके काम, उनकी आज्ञाकारिता, उन के इबादत के स्तर हमारे लिए नमूना हैं और हम इन को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की कोशिश करें। इस समय में कुछ सहाबा किराम की कुछ घटनाएं वर्णन करूंगा।

एक सहाबी अबू दुजानह अंसारी रज़ि थे उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना हिजरत से पहले इस्लाम को स्वीकार कर लिया था। मदीना में रहने वाले थे। उन्होंने यह भी सम्मान प्राप्त था कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बदर की लड़ाई में शामिल हुए और बहुत साहस दिखाया। इसी तरह उहद के युद्ध में भी शामिल होने की तौफीक़ मिली और युद्ध का रुख पलटने के बाद, यानी जब मुसलमान पहले जीत रहे थे तो रुख पलटा और एक जगह छोड़ने की वजह से काफिरों ने फिर हमला किया और युद्ध का पांसा मुसलमानों के खिलाफ हो गया तो जो सहाबा उस समय आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास रह गए थे उनमें हज़रत अबू दुजानह शामिल थे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बचाव में यह बहुत घायल भी हो गए थे लेकिन उन घावों के बावजूद यह पीछे नहीं हटे।

(सैरुस्सहाबा 3 पृष्ठ 207 हजरत अबू दुजान अंसारी रज़ि प्रकाशन कराची, 2004 ई) (एलिज़ाबेथ जिल्द 4 पृष्ठ 1644 अबू दुजानह दारुल जबल बैरूत 1992 ई)

यह घटना भी आप से संबंधित रिवायत में आता है कि जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी तलवार ऊंची कर के एक अवसर पर कहा कि कौन है जो आज इस तलवार का हक़ अदा करेगा तो हज़रत अबू दुजानह अंसारी ही आगे बढ़े थे और कहा था मैं इस बात का वादा करता हूं कि इस तलवार का हक अदा करूंगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन का जोश देख कर उन्हें तलवार दी फिर उन्होंने दोबारा हौसला कर के पूछा कि "हे अल्लाह के रसूल! इस तलवार का हक किस प्रकार अदा होगा? आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया "यह तलवार किसी मुसलमान का कोई खून नहीं बहाएगी। दूसरे कोई

दुश्मन काफिर बचकर नहीं जाएगा।

(सहीह मुस्लिम हदीस 6353) (कनज़ुल उम्माल जिल्द 4 पृष्ठ 339 हदीस 10792 मुद्रित मौस्स अर्रिसाला बैरूत 1985)

दुश्मन काफ़िर, वह काफिर जो दुश्मनी करने वाले हैं, जो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध करने वाले हैं। यह उनके ख़िलाफ इस्तेमाल करनी है। आप यह तलवार लेकर बड़े गर्व और अकड़ कर मैदान जिहाद में आए तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सामान्य परिस्थितियों में तो अल्लाह तआला को गर्व का इस प्रकार व्यक्त करना पसंद नहीं है। लेकिन आज मैदाने जंग में अबू दुजानह की अकड़ कर चलने की यह अदा बहुत पसंद आई है।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 6 पृष्ठ 93 अबू दुजानह मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1996 ई)

यमामा के युद्ध में मुसलिम: कज़्ज़ाब के विरुद्ध लड़ाई करते हुए आप ने शहादत पाई। उन्होंने बड़ी बहादुरी से किले का दरवाज़ा खोलने के लिए (वह किले के अंदर बंद हो गया था और दरवाज़ा बंद कर लिया था) एक चतुराई की और अपने साथियों को कहा कि मुझे दीवार से अंदर फेंक दो। बहुत उंची दीवार थी। इस तरह जब उन्हें फेंका गया तो गिरने से उनका पैर भी टूट गया लेकिन इसके बावजूद बड़ी बहादुरी से लड़ते हुए किले का दरवाज़ा खोल दिया और मुसलमान अंदर प्रवेश कर गए। अद्भुत साहस और बहादुरी को प्रकट किया जो उन्होंने व्यक्त किया। लेकिन बहरहाल उस स्थिति में लड़ते हुए वह मारे गए थे।

(असदूल ग़ाबा जिल्द 2 पृष्ठ 551 समाक बिन ख़रश: मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1996 ई)

एक बार बीमारी अपने साथी को कहने लगे कि शायद मेरे दो कर्म अल्लाह तआला स्वीकार कर ले। एक यह कि मैं व्यर्थ बात नहीं करता। ग़ीबत नहीं करता। लोगों के पीछे उनकी बातें नहीं करता। दूसरी बात यह है कि किसी भी मुस्लिम के लिए मेरे दिल में कोई द्वेष और हसद नहीं है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 420 अध्याय अबू दजानह मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिम: का उल्लेख मिलता है जो प्रारंभिक अंसारी मुसलमानों से थे। बड़े बहादुर और साहसी आदमी थे। उहद के युद्ध में मुहम्मद बिन मुस्लिम: भी थे जो बहुत दृढ़ता से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ डटे रहे। एक विशेषता जो उन्हें प्राप्त थी वह यह है कि उनके पक्ष में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी इस प्रकार पूरी हुई कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर उन्हें अपनी तलवार प्रदान करते हुए कहा कि जब तक मुश्रेकीन के साथ तुम्हारी जंग हो। इस तलवार के साथ तुम युद्ध करते रहना। और जब ऐसा समय आए कि मुसलमान आपस में लड़ने लग जाएं तो यह तलवार तोड़ देना और अपने घर बैठ जाना यहां तक कि कोई तुम पर हमला करे या तुम्हारी मौत आ जाए।

उन्होंने इस नसीहत पर अमल किया और यह कर्म हज़रत उसमान रज़ियल्लाहो अन्हो की शहादत के बाद किया कि वास्तव में इस तलवार को तोड़ दिया और लकड़ी की एक तलवार बनाई जो म्यान में लटका ली। किसी ने पूछा कि इसका क्या लाभ है? फरमाने लगे कि इस की हिकमत यह है कि रोब कायम रहे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद का अनुपालन भी मैंने कर लिया है कि अब लोहे की तलवार नहीं रखनी और लकड़ी की तलवार किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकती। कुछ सहाबा कहते थे कि अगर किसी पर फित्ना का असर नहीं हुआ यानी वह फित्ना जब हज़रत उसमान की शहादत के बाद मुसलमानों में शुरू हुआ तो उसका किसी पर असर नहीं हुआ तो वह मुहम्मद बिन मुस्लिमा थे। उन्होंने फ़ितनों से बचने के लिए वीराने में डेरा डाल लिया और कहते थे कि जब तक फ़ित्ने टल नहीं जाते मेरा यही इरादा है कि मैं वीरानों में जीवन व्यतीत करूं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद जिल्द 3, पृष्ठ 338 से 340 अध्याय मुहम्मद बिन मुस्लिमा मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1990 ई)

अत: तो ये थे वे लोग जिन्होंने जंग की तो इसलिए कि धर्म पर हमला हो रहा था। इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि मुश्रेकीन जो धर्म को समाप्त करने के लिए हमला कर रहे हैं। उन से लड़ो। जब तक मुसलमान इस बात पर दृढ़ रहे, उन की ताकत भी इस प्रकार की थी कि दूसरों पर विजयी रहे। और जब आपस में लड़ाइयां शुरू हुईं, जब मुनाफेकीन की बातों में आकर आपस में एक दूसरे की गर्दन काटने लगे तो बेशक सरकारें तो चलती रहीं लेकिन एकता नहीं रही और धीरे धीरे हुकूमत भी कमज़ोर होती गई। और आज हम देखते हैं कि मुसलमानों के आपस में जो मतभेद हैं उनका चरम हुआ है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जो दूसरी भविष्यवाणी वह भी पूरी हो चुकी है कि अंधेरे युग के बाद जब प्रकाश का समय आए, मसीह मौऊद का समय आए, तो मसीह मौऊद को स्वीकार कर लेना और जमाअत के साथ जुड़ जाना कि इस में बरकत है। लेकिन इस आने वाले को न मानकर अब हम देखते हैं कि मुसलमान अपने ही देशों में एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं और इसी का नतीजा है कि आज ग़ैर मुस्लिम दुनिया वास्तव में मुसलमानों पर हुकूमत कर रही है।

हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा के बहुत अधिक राए में मज़बूती वाले और आज्ञाकारिता करनी की घटनाएं भी मिलती हैं और इस वजह से ख़लीफ़ा उन पर बहुत विश्वास करते थे। विशेष रूप से हज़रत उमर रज़ि अल्लाह और हज़रत उसमान रज़ि अल्लाह ने उन्हें कुछ बहुत महत्त्वपूर्ण काम दिए। कुछ अभियान सौंपे। तो कई बार काम करने वाले उहदेदारों की जो शिकायतें आती थीं, प्रणाली द्वारा जो विभिन्न काम करने वाले निर्धारित थे, उनके खिलाफ जब दूसरे मुलकों से, कहीं से शिकायतें आती थीं तो हज़रत उमर रज़ि उनके अनुसंधान के लिए मुहम्मद बिन मुस्लिमा को भेजा करते थे ।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 47 अध्याय ज़िक्र मस्लीन और हसरज उस्मान मुद्रित दारुल कुतब इलिमया बैरूत 1990ई) (असदुल ग़ाबा जिल्द 5 पृष्ठ 107 मुहम्मद बिन मुस्लिमा मुद्रित दारुल कुतुब इलिमया बैरूत 1996 ई)

एक प्रारंभिक सहाबी हज़रत अबू अय्यूब अंसारी थे। यह वह भाग्यशाली थे जिन्हें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना हिजरत के समय मदीना में मेज़बानी का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हर व्यक्ति की इच्छा थी कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके घर ठहरें और प्रत्येक इस बात को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से व्यक्त कर रहा था। आप की सेवा में आवेदन कर रहा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी ऊंटनी को खुला छोड़ दो जहां अल्लाह तआला की इच्छा होगी यह ठहर जाएगी। यह अबू अय्यूब अंसारी का भाग्य है कि उंटनी उन के घर के सामने आकर रुकी। लेकिन लोगों की तसल्ली अभी भी नहीं हुई थी। उन्होंने कहा कि हमारे घर भी क़रीब हैं यहाँ रहें इस पर आप ड्रॉ किया और फिर ड्रा में भी हज़रत अबू अय्यूब अंसारी का नाम ही निकला।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 1 पृष्ठ 183 अध्याय ज़िक्र ख़रूज मुद्रित दारुल कुतब इलिमया बैरूत 1990ई) (सैरुस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 110 अबू अय्यूब अंसारी मुद्रित दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

उनके घर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ठहरे। उन का जो घर था, दो मंजिला था। अबू अय्यूब अंसारी ऊपर की मंज़िल में रहते थे निचला हिस्सा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत किया। वहाँ ठहरने के समय की घटना है कि एक रात ऊपरी मंजिल में यह थे तो पानी का एक बड़ा घड़ा या जो बर्तन था वह टूट गया। मिट्टी के बरतन थे, पकी मिट्टी के इस में पानी रखा जाता था। अब भी तीसरी दुनिया में हमारे गरीब देशों में पाकिस्तान में भी अफ्रीका के ऐसे बर्तनों में पानी रखा जाता है। बहरहाल वह टूट गया। अबू अय्यूब अंसारी और उसकी पत्नी ने सारी रात अपनी रज़ाई से उसे सुखाते रहे अगले दिन उन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रात की घटना सुनाई और अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप ऊपर की मंजिल में रहें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और लगभग छह सात महीने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके यहाँ रहे। उन्होंने मेहमान नवाज़ी का भी हक अदा करने की कोशिश की आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बचे हुए भोजन से यह खाना खाते थे। रिवायत में लिखा है कि जो खाना बच आता था तो जहां आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उंगलियों के निशान होते थे वहाँ यह खाना खाया करते थे। एक दिन देखा कि भोजन पर कोई निशान नहीं है और खाना खाया हुआ नहीं लगता है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप ने आज खाना नहीं खाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैं खाना खाने लगा तो मैंने देखा कि उसमें प्याज़ और लहसुन डाला हुआ है और मुझे यह पसंद नहीं इसलिए नहीं खाया। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी ने अर्ज़ किया कि जिसे हुज़ूर पसंद नहीं करते इसे मैं भी नापसंद करता हूँ और भविष्य में ये दोनों चीज़ें नहीं खाऊँगा। अजीब मुहब्बत और प्रेम के किस्से हैं।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 7 पृष्ठ 781 हदीस 23966 मसनद अबू अय्यूब

अंसारी मुद्रित आलेमुल कुतुब बैरूत) (सहीह मुस्लिम हदीस 5356) (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 1 पृष्ठ 183 ज़िक्र ख़रूज रसूल अल्लाह मुद्रित दारुल कुतूब इलिमया बैरूत 1990 ई)

अबू अय्यूब अंसारी सभी युद्धों में शामिल हुए (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3 पृष्ठ 369 मुद्रित दारुल कुतूब इलिमया बैरूत 1990 ई)

ख़ैबर के युद्ध में यहूदी सरदार जो युद्ध में मारा गया था उसकी बेटी सफिया जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादी में आईं तो विदाई के अगले दिन जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह नमाज़ पढ़ाने के लिए बाहर आए तो देखा कि अबू अय्यूब अंसारी बाहर पहरा पर खड़े हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे पूछा, क्या कारण हो कि तुम पहरे पर खड़े है। उन्होंने कहा कि हजरत सफ़िया के प्रिय रिश्तेदारों ने हमारे हाथों से चोट पहुंची है। कुछ मारे गए हैं यही कारण है कि मैंने सोचा था कि कोई कुछ शरारत न करे। कोई आकर अपना बदला लेने की कोशिश न करे। यही कारण है कि मैं पहरे पर ख़ड़ा हूं। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन के बारे में इस प्रकार दुआ दी, हे अल्लाह ! हज़रत अबू अय्यूब को हमेशा अपनी सुरक्षा में रखना जिस प्रकार रात भर यह मेरी हिफाज़त में रहा।

हज़रत अबू अय्यूब रूम की जंग में शामिल हुए। बावजूद इस के आप बूढ़े हो गए थे परन्तु केवल इस लिए शामिल हुए कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुस्तनतनिया के बारे में जो भविष्यवाणी थी उस को आप देख सकें। बहरहाल इस दौरान आप बीमार भी हो गए। जब आप से आप की अंतिम इच्छा के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि सभी मुसलमानों को मेरा सलाम कहना और मेरी कब्र दुश्मन के इलाके में जहां तक जा सकते हैं वहाँ जाकर बनाना। अत: आपकी मृत्यु के बाद, रात के समय आप की जनाज़ा दुश्मन की ज़मीन में जहां तक जाया जा सकता था ले जाया गया और वहां आप को दफन किया गया। आप की कब्र आज भी तुर्की में है और देखने वाले बताते हैं कि, कुछ रिवायतें इस प्रकार की भी हैं कि लोगों ने कुछ बिदअत वाली रिवायतें भी बना ली हैं कि उन से मांगते हैं। उन से तो बहरहाल नहीं मांगते परन्तु दुआ जो उन की कब्र पर की जाए वह स्वीकार भी हो जाती है।

(अस्सैरुल हलबिया जिल्द 3 पृष्ठ 65 ग़ज़वह खैबर प्रकाशन दारुल कुतुब बैरूत 2002 ई) (असदुल ग़ाबा जिल्द 2 पृष्ठ 123 ख़ालिद बिन ज़ैद बिन कलीब मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1996)

तो बहरहाल बाद में ये कुछ कहानियाँ भी बन जाती हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप की सुरक्षा और हिफाज़त की जो दुआ की थी इसका नतीजा यह है कि आप कई युद्धों में शामिल हुए और हर जगह ग़ाज़ी बनकर आए और बड़ी लम्बी उम्र पाई।

फिर हम देखते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा थे जो अरब के मशहूर शायर भी थे और रसूल के कवि के उपनाम से भी जाने जाते थे।

(सीरते अस्सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 409 मुद्रित दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

बदर के जंग के समाप्त होने के बाद जीत की ख़बर मदीना पहुंचाने वाले भी आप ही थे। (अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद जिल्द 3, पृष्ठ 398 अध्याय अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा की आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत, प्रेम और सम्मान को व्यक्त करने की भी घटनाएं हैं जिनका एक जगह यूं उल्लेख मिलता है। उरवह से रिवायत है कि हज़रत ओसामा बिन ज़ैद ने उन्हें बताया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक गधे पर सवार हुए जिस पर पालान था। इस के नीचे फिदक के इलाका की चादर थी। आप ने आपने पीछे ओसामा को बिठाया हुआ था आप हज़रत सअद बिन अबादा की अयादत के लिए बनी हारिस बिन खज़रज में पधारे। यह बदर की घटना से पहले की बात है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मज्लिस में पहुंचे जिस में मुसलामान तथा मुश्रेकीन और यहूदी मिले जुले बैठे हुए थे। और इसी मज्लिस में अब्दुल्लाह बिन रवाहा भी थे। जब मज्लिस के निकट पहुंचे तो वहां सवारी के निकट थोड़ी से धूल उड़ी। अबदुल्लाह बिन उबयी ने अपनी नाक अपनी चादर से ढांक ली। फिर कहने लगा कि हम पर धूल न डालो। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें अस्सलामो अलैकुम कहा। फिर रुके और सवारी से उतरे और उन्हें अल्लाह की तरफ बुलाया और उन पर कुरान पढ़ा। अब्दुल्ला बिन उबयी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहने लगा कि हे व्यक्ति यह अच्छी बात नहीं है। जो तुम कहते हो अगर सच्चे हो तो फिर हमें हमारी मज्लिस में परेशान मत करो और अपने डेरे की तरफ वापस लौट जाओ और जो तुम्हारे पास आए उसे वर्णन किया करो। हज़रत अब्दुल्लाह बनि रवाहा वहां बैठे थे उन्होंने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल ! आप हमारी मज्लिस में आया करें हम इसे पसंद करते हैं।

(सही मुस्लिम किताबुल जिहाद हदीस 4659)

उन्होंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया, यह जो उन का सरदार है वह क्या कह रहा है। तो यह आप का सम्मान का और मुहब्बत का अपने आप प्रकटन था जो अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने किया और इन सरदारों और दुनिया दारो की कुछ भी परवाह न की।

हज़रत इब्ने अब्बास से एक रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अभियान में साथियों को भेजा। जिनमें हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा भी शामिल थे। शुक्रवार का दिन था। अभियान में शामिल शेष सहाबा तो सुबह चले गए। उन्होंने कहा मैं पीछे रह कर जुम्अ: की नमाज़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे अदा करूंगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें देखा कि मस्जिद में मौजूद हैं जुम्अ: की नमाज़ के बाद उन से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुझे किस चीज़ ने अपने साथियों को साथ साथियों के साथ रवाना होने से रोक रखा है? उन्होंने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल मेरी बहुत इच्छा और तमन्ना थी कि नमाज़ जुम्अ: में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पीछे ख़ुत्बा सुन सकूं और फिर पीछे जाकर उस दल से जा मिलूं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पृथ्वी में जो कुछ है अगर वे सब भी तुम खर्च कर डालो तो जो लोग हिदायत के अनुसार सुबह अभियान पर रवाना होकर आगे चले गए वह इनाम और बदला तुम कभी नहीं पा सकते।

(सुनन अत्तरिमज़ी हदीस 527)

तो यहां आवश्यक है जो इताअत है वह फर्ज़ है। इस के बाद रिवायत में आता है कि जब किसी ग़ज़वा या मुहिम पर जाना होता तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा सब से पहले होते। और सब से अन्त में मदीना वापस लौट कर आया करते थे।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3, पृष्ठ 236 अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुद्रित दारुल्.कतूब इल्मिया बैरूत 1996 ई)

एक रिवायत में आता है और यह हज़रत उरवह बन ज़ुबैर से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने गज़वहा मूतह में हज़रत ज़ैद बन हारसा को लश्कर का सरदार बनाया और कहा कि अगर यह शहीद हो जाएं तो हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब लश्कर के अमीर हूँ यदि वह शहीद हो तो अब्दुल्ला बिन रवाहा को नेतृत्व को संभालना होगा। अगर अब्दुल्लाह भी शहीद हो तो मुसलमान जिस को पसन्द करें अपना सरदार बना लें। इस लश्कर के प्रस्थान और अलविदा का समय आया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रोने लगे। लोगों ने कहा कि अब्दुल्लाह क्यों रो रहे हो? उन्होंने कहा, ख़ुदा की कसम मुझे दुनिया से कोई प्यार नहीं है। इस का कोई शौक नहीं है लेकिन मैंने इस आयत को وَاِنۡ مِّنۡكُمۡ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتۡمًا مَّقۡضِيًّا (मरियम 72 :) के बारे में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक बार ज़रूर आग का सामना करना है। इसलिए मैं नहीं जानता कि पुल सिरात पर चढ़ने के बाद पार उतरने पर मेरा क्या हाल होगा।

(असदु ग़ाबा भाग 3, पृष्ठ 237, अध्याय अब्दुल्लाह बिन रवाहा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत)

लेकिन उन का अल्लाह का भय रखने वालों के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो ख़बर दी थी उस का भी वर्णन मिलता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगे मौता के लशकर के अमीरों के बारे में फरमाया कि मैंने उन को जन्नत में सोने के तख़्तों पर बैठे हुए देखा है।

(असदुल ग़ाबा भाग 3 पृष्ठ 238 अध्याय अब्दुल्लाह बिन रवाहा प्रकाशन दारुल कुतब इल्मिया बैरूत 1996 ई)

इसलिए ये लोग अपनी आशाओं को पाने वाले थे। इन के शहीद होने की भावना इन के इस शेर से प्रकट होती है। जिस का अर्थ यह है कि इस प्रकार के तार और भाले मुझे लगें जो मेरी आंतों से गुज़र कर जिगर के पार हो जांए और ख़ुदा तआला के यहां मेरी शहादत स्वीकार हो जाए। आर जब लोग मेरी कब्र से गुज़रें तो कहें कि ख़ुदा इस का भला करे कैसा महान गाज़ी था। मौतह के युद्ध में जिस में यह शहीद हुए थे उसका कुछ विवरण इस तरह है कि मौतह के स्थान पर पहुंचकर पता

चला कि ग़स्सानियों ने मुसलमानों के ख़िलाफ हरकल शाहे रूम से मदद मांगी है और उसने दो लाख का लश्कर मुसलमानों के मुकाबला के लिए भिजवाया है। इस अवसर पर लशकर के मुसलमान हाकिमों ने परस्पर विचार-विमर्श किया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में संदेश भेजना चाहिए कि दुश्मन की संख्या बहुत ज्यादा है इसलिए सहायता भिजवाई जाए या फिर जो भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद हो इस पर अनुकरण किया जाए। चाहिए इस अवसर पर हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा ने मुसलमानों के बहुत मनोबल बढ़ाए और उनकी युद्ध की कविता भी खूब काम आई। मुसलमानों के तीन हज़ार का लश्कर दो लाख की सेना के मुकाबला में अकेले आगे बढ़ा।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3 पृष्ठ 237 अध्याय अब्दुल्लाह बिन रवाहा प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1996 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत की इच्छा का वर्णन हज़रत ज़ैद बिन अरकम इस प्रकार करते थे कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुझे अपनी ऊंटनी के पीछे सवार कर के ज़ंगे मौतह में साथ ले गए। ज़ैद बिन अरकम को हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने एक यतीम बच्चे की तरह पाला था और उन की तरबियत की थी। कहते हैं कि एक रात मैंने अब्दुल्ला बिन रवाहा को यह शेअर पढ़ते हुए सुना, जिस में अपने परिवार वालों की याद के साथ, यह उल्लेख किया गया था कि मैं फिर कभी घर नहीं जाऊंगा। बड़े मज़े से वह शेर गुनगुना रहे थे जिनमें हज़रत अब्दुल्ला अपनी पत्नी को संबोधित करते हुए कहते थे कि जुम्मेरात की वह शाम जब तुम ने मेरे ऊंट की पालान को जिहाद के सफर के लिए ठीक किया था और अंतिम बार मेरे पास थी तेरी वह हालत क्या अच्छी और मुबारत थी। तुझ में कोई दोष या बुराई तो नहीं है, लेकिन अब मैं इस युद्ध के मैदान में आ चुका हूँ और मैं इस से वापस लौट कर तुम्हारी तरफ कभी वापस नहीं आऊंगा। मानो यह उनका अपने परिवार के लिए ग़ैब में अलविदा था। छोटे ज़ैद ने सुने तो दुखी होकर रो दिए। हज़रत अब्दुल्लाह ने उन्हें डांटा और कहा, हे कम अक्ल वाले! यदि अल्लाह तआला मुझे शहादत प्रदान करे तो तेरा क्या नुकसान है बल्कि तुम मेरी सवारी लेकर अकेले आराम से बैठकर वापस लौटोगे।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3, पृष्ठ 236-237 अध्याय अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1996 ई)

जिहाद के मैदान में हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा ने बहादुरी के खूब जौहर दिखाए। हज़रत नुअमान बिन बशीर ने उल्लेख किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा लशकर के एक तरफ थे। लोगों ने उन को बुलाया। वह अपने आप को सम्बोधित करते हुए यह ज़बानी शेअर पढ़ते हुए आगे बढ़े और उन का अनुवाद यह है कि हे मेरे नफ्स क्या तुम इस प्रकार लड़ाई नहीं करोगे कि जान दे दो। मौत के तालाब में तुम दाख़िल हो चुके हो। शहादत की जो इच्छा तुम ने की तुम इस में दाख़िल हो चुके हो। शहादत की जो इच्छा तुम ने की थी इस को पूरा करने का समय आ चुका है। अब अगर जान का नज़राना पेश करो तो शायद नेक अंजाम को पा जाओ।

मुसअब बिन शैअबह वर्णन करते हैं कि जब हज़रत ज़ैद और हज़रत जाफ़र भी शहीद हो गए तो हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा मैदान में आगे आए। जब उन्हें भाला लगा तो ख़ून की एक धारा उन के शरीर से निकली। आपने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उसमें खून लिया और उसे अपने मुंह पर मल लिया। फिर वह दुश्मन और मुसलमानों की पंक्तियों के बीच घिर गए लेकिन आखिरी सांस तक सेना के सरदार के रूप में मुसलमानों का हौसला बढ़ाते रहे और बहुत प्रभावी भावनात्मक रंग में मुसलमानों को भड़काते हुए अपनी मदद के लिए बुलाते रहे कि देखो हे मुसलमानों यह तुम्हारे भाई का शरीर दुश्मनों के सामने पड़ा हुआ है। आगे बढ़ो और अपने भाई को दुश्मनों के रास्ते से दूर करो और हटा दो। अत: मुसलमानों ने इस अवसर पर बहुत ज़ोर से कुफ्फार पर हमला किया और अक के बाद एक हमला करते रहे और यहां तक कि हज़रत अब्दुल्लाह शहीद हो गए।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3, पृष्ठ 237-238 बाब अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1996 ई)

उनकी एक विशेषता के बारे में उनकी विधवा ने उनकी शहादत के बाद बताया। जब उनकी विधवा का विवाह हो गया तो उस पति ने कहा कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा की पवित्र जीवनी के बारे में मुझे कुछ बताएं। तो उस महिला ने क्या ही सुन्दर गवाही दी। कहने लगीं कि अब्दुल्लाह बिन रवाहा कभी घर से बाहर नहीं जाते थे जब तक कि दो रकअत नफल न अदा कर लें। इसी प्रकार जब घर में वापस आते थे ते आप का पहला काम यह होता था कि वज़ू कर के दो रकअत नमाज़ अदा किया करते थे।

(अल- असाबा फी तमीज़ सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 74 अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 2005 ई)

ये लोग थे जो अल्लाह तआला को हर हालत में और हर समय याद रखने वाले थे। उनकी आज्ञाकारिता की गुणवत्ता का रिवायत में उल्लेख मिलता है हज़रत अबू लैला ने वर्णन करते हैं कि एक बार आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुत्बा फरमा रहे थे: इस समय आपने फरमाया कि लोगो! बैठ जाओ हजरत अब्दुल्ला बिन लैला मस्जिद के बाहर ख़ुत्बा सुनने के लिए हाज़िर हो रहे थे। वह वहां बैठे गए। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें संबोधित कर के कहा कि زَادَكَ اللّٰهُ حِرْصًا عَلٰى طَوَاعِيَةِ اللّٰهِ وَطَوَاعِيَةِ رَسُوْلِهٖ कि हे अब्दुल्लाह बिन रवाहा ! अल्लाह और उसके रसूल के लिए आज्ञाकारिता की यह भावना अल्लाह तआला और अधिक बढ़ाए।

धार्मिक बातें करने, धार्मिक बातें करने, एक दूसरे का हक अदा करने का लिए उन लोगों के क्या स्तर थे। इस बारे में हज़रत अबू दर्दा वर्णन करते हैं कि मैं इस बात से अल्लाह तआला की पनाह चाहता हूं कि मेरे ऊपर कोई एसा दिन आए जब मैं अब्दुल्लाह बिन रवाहा को याद न करूं। प्रत्येक दिन मैं उन को याद करता हूं और उस का कारण उन की, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा की, यह ख़ूबी है कि जब भी मेरे से मुलाकात हुई अगर वह पीछे से आ रहे होते तो अपना हाथ मेरे कंधों पर रख देते और सामने से आ रहे होते तो सीने पर हाथ रखते और फरमाते हे अबू दर्दा ! आओ ज़रा मिल बैठें और ईमान ताज़ा करें। कुछ ईमान के बातें करें। फिर वह मेरे साथ बैठते और जब तक हमें मौका मिलता हम अल्लाह तआला को याद करते। फिर फरमाते हे अबू दर्दा ! यह ईमान की मज्लिसे हैं।

(असदुल ग़ाबा जिल्द 3, पृष्ठ 236 अध्याय अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 1996 ई)

अत: ईमान का मज्लिसें लगाने वालों ने वह नमूने स्तापित किए जो हमारे लिए आदर्श हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप की बातों और आप की मज्लिसों को किस प्रकार सनद प्रदान की। हज़रत अनस वर्णन करते हैं कि हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा की आदत थी कि जब अपने किसी सहाबा से मिलते तो उन्हें यह तहरीक करते थे कि تَعَالَ نُؤْمِنْ بِرَبِّنَا سَاعَةً चलो, थोड़ी देर के लिए अपने रब्ब पर ईमान ले आएं। एक दिन आप ने यही बात एक आदमी से कही तो वह ग़ुस्सा में आ गया और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ कर कहने हे मैसेंजर अल्लाह के रसूल ! इब्ने रवाहा को देखिए यह लोगों को आप पर ईमान लाने से मोड़ कर थोड़ी देर के लिए ईमान की दावत दे रहा है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: يَرْحَمُ اللّٰهُ ابْنَ رَوَاحَةَ अल्लाह तआला अब्दुल्ला बिन रवाहा पर दया करे आप ने फरमाया कि वह इस प्रकार की मज्लिसों को पसन्द करते हैं जिन पर फरिशते भी गर्व करते हैं।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 4 पृष्ठ 676 हदीस 13832 मुस्नद अनस बिन मालिक प्रकाशन आलेमुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1998 ई)

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

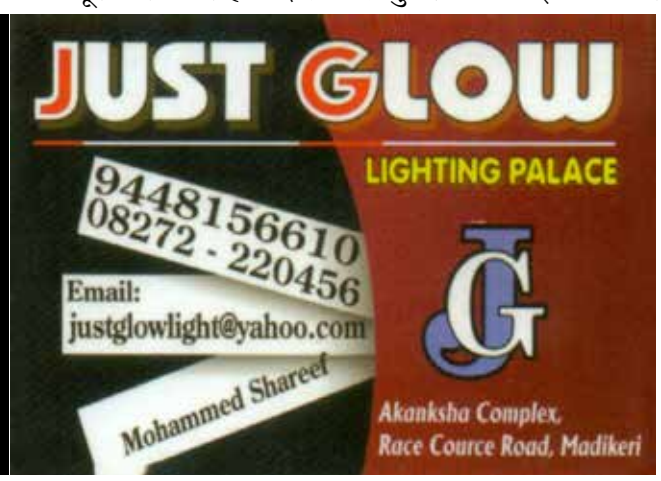

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

आप एक उच्च स्तर के शायर थे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरबार के शोअरा में हज़रत काब बन मालिक और हज़रत हस्सान बिन साबित के अतिरिक्त आप तीसरे उच्च स्तर के शायर थे। उनकी कविता रज़मिया थी। मअजमुश्शअरा के लेखक लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा जाहिलियत के दौर की कविता में भी बहुत मान और इज्जत रखते थे और इस्लाम के समय में भी उन्हें बहुत ऊंचा स्थान और दर्जा प्राप्त था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में एक शेर हज़रत अब्दुल्ला बिन रवाहा ने ऐसा कहा कि उसे आप का सर्वश्रेष्ठ शेर कहा जा सकता है। वह शेर आप की दिल की स्थिति को खूब वर्णन करता है जिस म`हंज़रत अब्दुल्ला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित करते हुए कहा।

لَوْلَمْ تَكُنْ فِيْهِ آيَاتٌ مُّبَيِّنَةٌ
كَانَتْ بَدِيْهَتُهُ تُنْبِيْكَ بِالْخَبَرِ

(अलअसाबा फी तमीज़ अस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 75 अब्दुल्लाह बिन रवाहा मुद्रित दारुल कुतूब इलमिया बैरूत 2005 ई)

कि मुहम्मद मुसतफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अगर सत्य और नेकी को व्यक्त करने के लिए वे सभी खुले खुले और चमकदार निशान न भी होते जो आपके साथ थे तो भी केवल आप का चेहरा ही आप की प्रामाणिकता के लिए पर्याप्त था जो खुद आप की सच्चाई की घोषणा कर रहा था। ये लोग थे जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चे आशिक थे जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा देखकर ही हक को पहचाना।

फिर इतिहास में, हमें दो छोटे भाइयों का उल्लेख मिलता है जिनका साहस अद्भुत था। हज़रत मुआज़ बिन हारिस बन रफअ और हज़रत मुअवज़्ज़ बिन हारिस बन रफाअ। बदर के युद्ध में उन्होंने हिस्सा लिया उन्होंने अबू जहल के कत्ल में भी भाग लिया। बदर का जो मैदान था उसमें भीषण लड़ाई हो रही थी और मुसलमानों के सामने उनसे तीन गुना अधिक दल था जो सभी प्रकार के जंग के उपकरणों से सजा हुआ था और इस प्रतिबद्धता के साथ मैदान में निकला था कि हम ने इस्लाम का नामो-निशान मिटा देना है। मुस्लमान बेचारे संख्या में थोड़े थे। इस सारी घटना को हज़रत मिर्जा बशीर अहमद साहब ने भी अपनी पुस्तक सीरत ख़ात्मन्नबिय्यीन में लिखा है। और मुसलमानों की गरीबी और कमज़ोरी का अवस्था का वर्णन किया था। ज़ाहरी कारणों के आधार पर मक्का वालों के सामने जो मुसलमान लोग थे ये कुछ मिनटों का शिकार थे लेकिन तौहीद और रिसालत के प्रेम ने उन्हें ऐसा बना दिया था। वे ऐसे जोश में डूबे हुए थे कि जिस से अधिक उस समय शक्तिशाली दुनिया में और कोई बात नहीं थी और यह ईमान था। उनका जीवित ईमान जिस ने उनके भीतर एक असामान्य शक्ति भर दी। उस समय, वे युद्ध के मैदान में धर्म की सेवा कर रहे थे, जिस का उदाहरण नहीं मिलता। प्रत्येक व्यक्ति दूसरों से ज्यादा ख़ुदा की राह में जान देने के लिए तैय्यार नज़र आता है। अंसार के जोश का, ईमानदारी की यह अवस्था थी कि अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहो अन्हो रिवायत करते हैं कि जब लड़ाई शुरू हुई तो मैं अपने दाहिने बाएँ देखे। परन्तु क्या देखता हूं कि अंसार के दो युवा लड़के मेरे पहलू में खड़े हैं। उन्हें देख कर मेरा दिल कुछ बैठ सा गया कि ऐसे युद्ध में दाएं से बाएं साथियों पर भरोसा होता है और वही व्यक्ति अच्छी तरह लड़ सकता है जिसके पहलू सुरक्षित हों। लेकिन अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मैं इस विचार में ही था कि ये बच्चे मेरी क्या रक्षा करेंगे कि इन लोगों में से एक ने मुझे धीरे से पूछा जैसे दूसरे से अपनी बात छिपाना चाहता है कि चाचा! वह अबु जहल कहां है जो मक्का में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दु:ख दिया करता था। लड़का कहने लगा मैंने ख़ुदा से वादा किया है कि मैं उसे कत्ल करूंगा या मारने की कोशिश में मारा जाऊँगा। कहते हैं मैंने अभी इसका जवाब नहीं दिया था कि दूसरी तरफ से दूसरे ने भी इसी तरह धीरे से यही सवाल किया तो उनकी हिम्मत देखकर चकित रह गया। क्योंकि अबू जहल सरदार का लश्कर था और उसके चारों ओर मज़बूत सैनिक मौजूद थे। बहुत अनुभव वाले सैनिक थे। मैंने हाथ से संकेत कर के कहा कि कि वह अबू जहल है। अब्दुर्रहमान कहते हैं कि मेरा इशारा करना था कि दोनों बच्चे बाज़ की तरह झपट्टे और दुश्मन को पंक्तियाँ को काटते हुए आन की आन में वहाँ पहुँच गए और तेज़ी से वार किया कि अबू जहल और उसके साथी देखते रह गए और अबू जहल को नीचे गिरा लिया। अकरम: बिन अबू जहल भी अपने पिता के साथ था। वह अपने पिता को तो नहीं बचा सका मगर उसने पीछे से मुआज़ पर ऐसा वार किया कि उसका दायां हाथ कट गया और लटकने लगा। मुआज़ ने अकरम: का पीछा किया लेकिन वह बच गया चूँकि कटा हुआ हाथ लड़ने में रोक पैदा कर रहा था तो मुआज़ उन से ज़ोर से खींच कर अपने शरीर से अलग कर दिया और फिर लड़ने लग गए।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 362)

तो इन लोगों में ईमान की ग़ैरत थी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इश्क था जिसने उन्हें निडर बना दिया कि वह व्यक्ति जो इस्लाम को खत्म करना चाहता था, जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कई साल तक कष्ट देता रहा उसका अंजाम हमारे हाथों से हो। यह आजकल के तथाकथित जेहादियों की तरह नहीं थे जो युवाओं को, बच्चों को रीडीकलाईज़ (radicalize) कर लेते हैं कि आओ और इस्लाम के लिए युद्ध करो बल्कि उनका एक उद्देश्य था कि दुश्मन अगर हमें अब शांति नहीं देता बावजूद इसके कि हम अलग हो गए हैं तो इस के लिए हमें कुरबानी देनी चाहिए ताक अमन स्थापित हो। न कि उपद्रव पैदा हो। आजकल तो सरकारों पर कब्जा करने के लिए युवाओं को ज़बरदस्ती अपहरण कर लिया जाता है फिर रीडीकलाईज़ (radicalize) कट्टरपंथी किया जाता है। पिछले दिनों यह खबर थी कि सीरिया में चौदह साल का एक लड़का उनसे बच कर निकल आया तो कहने लगा कि मैं स्कूल से आ रहा था मुझे अपहरण कर लिया और अपहरण करके फिर जबरदस्ती मुझे ट्रेनिंग दी। पहले मैं सहमत नहीं था तो मुझ पर कठोरता की गई। अंत में मुझ से जंग करवाई जाती थी और बड़ी कठिनाई से फिर मैं वहां से बच कर आया हूं। तो मुसलमान इस्लाम के नाम पर ऐसे काम कर रहे हैं, जो इस्लाम की शिक्षाओं के ख़िलाफ हैं। अगर इस्लाम ने युद्ध की, इस्लाम ने अगर जानें दीं और उन लोंगों में कुरबीनियों की भावना थी तो इस के लिए कि धर्म को बचाना है और दुनिया में अमन स्थापित करना है। अत: आजकल के जिहादियों में और इन जिहाद करने वालों में बहुत अधिक अन्तर है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मैं यही नमूना सहाबा का अपनी जमाअत में देखना चाहता हूँ कि अल्लाह तआला को वह प्राथमिकता दे और कोई बात उनके रास्ते में रोक न हो। वे अपनी संपत्ति और अपनी जान को तुच्छ समझें। मैं देखता हूं कि कुछ लोगों के कार्ड आते हैं। किसी व्यापार या अन्य काम में हानि हुई या कोई और नुकसान हुआ तो शीघ्र ही शंका में पड़ गए। "कि पता नहीं हम ने मसीह मौऊद को मान कर को ई ग़लती तो नहीं कर ली। तो इस प्रकार की शंकी धर्म के बारे में ख़ुदा तआला की हस्ती के बार में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के बारे में आते हैं।) आप फरमाते हैं कि "इस अवस्था में हर आदमी समझ सकता है कि वास्तविक उद्देश्य और लक्ष्य

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

से वह कितना दूर है। ध्यान से देखो कि क्या अन्तर है सहाबा में। सहाबा यह चाहते थे कि ख़ुदा तआला को राज़ी कर लें चाहे इस मार्ग में किसी प्रकार का दु:ख और कष्ट सहन करना पड़े। अगर कोई कठिनाइयों और कष्टों में न पड़ता और उसे देर होती थी तो वह रोता और चिल्लाता था।" (यानी सहाबा में से वे समझते थे कि कठिनाइयों में पड़ना अल्लाह तआला की निकटता दिलाएगा। वे यह समझ चुके थे।) फरमाते हैं कि "वे समझ चुके थे कि इन परीक्षाओं के नीचे ख़ुदा तआला की ख़ुशी का परवाना और ख़ज़ाना छुपा है।"। आपने एक फारसी का शेअर यहां वर्णन किया कि

हर बला कीं कौमे रा हक दादह अस्त
ज़ेरे ईं गंजे करम बिनहादह अस्त

अर्थात जो भी परीक्षा ख़ुदा तआला की तरफ से उस क़ौम की तरफ आए उस के नीचे ख़ुदा तआला के उपकार का एक ख़ज़ाना छुपा हुआ होता है।

फिर आप फरमाते हैं कि "कुरआन शरीफ इन की प्रशंसा से भरा हुआ है। उसे खोल कर देखो। सहाबा का जीवन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई की व्यावहारिक सबूत था। सहाबा जिस स्थान पर पहुंचे उस को कुरआन शरीफ ने इन शब्दों ने वर्णन फरमाया है مِنۡهُمۡ مَّنۡ قَضٰى نَحۡبَهٗ وَمِنۡهُمۡ مَّنۡ يَّنۡتَظِرُ (सूरत अल-अहज़ाब :24) अर्थात कुछ उन में से शहादत पा चुके और उन्होंने ने मानो वास्तविक उद्देश्य प्राप्त कर लिया और कुछ इस प्रतीक्षा में हैं कि चाहते हैं कि शहादत प्राप्त हो। सहाबा दुनिया की तरफ झुके कि उमरें हों और इतना माल तथा दौलत मिले और इस प्रकार बेफिक्री और एश के सामान हों।" आप फरमाते हैं कि " मैं जब सहाबा कि इस नमूनू को देखता हूं तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुव्वते कुदसी कमाल फैज़ान को अपने आप मानना पड़ता है कि किस प्रकार आप ने उन की काया पलट दी और उन्हें बिल्कुल अल्लाह तआला के हवाले कर दिया।

आप फरमाते हैं कि "सारांश यह है कि हमारा कर्तव्य यह होना चाहिए कि हम अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए इच्छुक रहे हैं और उसे ही अपना मूल उद्देश्य बना लें। हमारी सारी कोशिश और प्रयास अल्लाह तआला की ख़ुशी को प्राप्त करने में होने चाहिए चाहे वह कठिनाई और चेष्ठा से ही प्राप्त हो। यह अल्लाह तआला की प्रसन्नता दुनिया और इस की सारी लज़्ज़तों से उत्तम और अच्छा है।"

(मल्फूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 82-83 प्रकाशन 1985 ई यूके)

अल्लाह तआला हमें यह फर्ज़ अदा करने की तौफीक़ प्रदान फरमाए।

नमाज़ के बाद, एक जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा। जो आदरणीय अल-हाज इस्माईल वी .के आडू साहिब का है। घाना के अहमदी थे। 84 साल की उमर में 8 मार्च को वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप पैदायशी अहमदी थे। और उन का पिता का नाम इस्माईल Kwabena आडो और माता की नाम जन्नत आडो था। आप के पिता पहले ईसाई थे। 1928 ई में उन्होंने बैअत की और जमाअत में शामिल हुए। इस्माईल ऑडो साहिब की मां का वफात शुरुआती जिंदगी में हो गई थी। उन्होंने तालीमुल अहमदिया स्कूल कमासी से शिक्षा प्राप्त की। फिर 1964 ई में अंग्रेजी में बीए किया। बाद में, उन्होंने शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज घाना से अपनी पेशेवर शिक्षा पूरी की और विभिन्न स्थानों पर नियुक्त हुए और 1980 ई तक सहायक प्रधान शिक्षक रहे। सालट पांड केंद्रीय विद्यालय में चले गए और वहां अंग्रेज़ी स्कूलके शिक्षक हो गए। स्कूल में छात्रों को छात्रों के लिए उन की सुविधा का प्रबंधन करते थे। उन्होंने वहां मुस्लिम छात्रों के लिए मस्जिद भी बनाई। फिर Nkrumah विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षक हुए। फिर उन्हें विभिन्न कॉलेजों में पढ़ाने का मौका मिला। फिर उन्होंने अंग्रेज़ी शिक्षण के बारे में एक किताब भी लिखी जो कि घाना और नाइजीरिया में प्रसिद्ध थी, जिसे पढ़ाया जाता है। विभाग से उन्हें इस बारे में छात्रवृत्ति प्राप्त हुई थी और विश्वविद्यालय (Bangor) में भेजा गया था और यहां उन्हें अंग्रेज़ी भाषा में एक डिप्लोमा किया। फिर उनकी जमाअत की सेवाएं हैं कि घाना के कई उहदों पर काम किया। 1980 ई में घाना की सरकार ने आप को Addis Ababa इथियोपिया के लिए बतौर राजदूत चुना और इसी पद पर थे कि UN ने आप को बतौर अध्यक्ष ओ ए .यू (OAU) लिबरेशन समिति निर्धारित किया जिसकी वजह से आप मोज़म्बीक और अंगोला के देशों को आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है कुछ समय आप लीबिया में एक राजदूत के रूप में नियुक्त हुए हैं। उनका गुण था, जहां भी वह गए, वहाँ हमेशा एक विशेष गुण था कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देते थे और अपनी यह पहचान हमेशा बनाए रखी। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि के हिजरत के प्रबाद, आप के यू.के आने के बाद उन्होंने अपने राजनीतिक कैरियर को भी अलविदा कहा और फिर यहीं आ गए ताकि अपने बच्चों के साथ ख़िलाफत के करीब रह सकें और यहाँ आकर फिर आप स्कूल में टीचर के रूप में काम करते रहे। उनको ख़िलाफत से, प्रत्येक ख़लीफा से एक विशेष प्रेम था। उन्होंने बहुत प्यार का व्यवहार और आज्ञाकारिता और इताअत का नमूना दिखाया। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे लने सलामान रुशदी के विरुद्ध किताब लिखने वाली जो कमेटी बनाई थी इस का इन को भी मेम्बर बनाया था। तब्लीग़ के मैदान में भी इन की बड़ी भूमिका थी। विभिन्न स्थानों पर तब्लीग़ी स्टाल लगाते थे। रेडियों पर तब्लीग़ का प्रोग्राम करते थे। विभिन्न जमाअतों में प्रश्न उत्तर की मज्लिसें लगाते थे। और इसी तरह 1986ई में जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह रापे ने पैन अफ्रीकन अहमदिया मुस्लिम एसोसिएशन स्थापित फरमाई तो उन को पहला सदर निर्धारित किया। यहां पेकहम जमाअत के पहले सदर नियुक्त हुए थे। 1994 ई में एम टी ए की शुरुआत के बाद उर्दू किलास के विशेष छात्रों में से थे और उस समय उर्दू सीखने के लिए कड़ी मेहनत करते थे। वे जो भी जितनी कोशिश कर सकते थे करते थे उर्दू कक्षा में, और उर्दू किलास मेंबड़े बच्चे के नाम से जाने जाते थे लोग उन्हें जानते हैं। घाना के थे और उनकी दो पत्नियां थीं। ख़लीफतुल मसीह राबे की वफात के अवसर पर जा ख़िलाफत के चयन की मज्लिस थी यह उस के सदस्य थे। जामिया का जब आरम्भ हुआ है यहां यूके में तो वहां भी उन्होंने कुछ समय तक अंग्रेज़ी पढ़ाई थी। तक्वा पर चलने वाले बहुत अधिक इबादत करने वाले धैर्य और शुक्र करने वाले रहम करने वाले औग बहुत अधिक दया करने वाले इंसान थे। इन के घर वालों ने बाताय कि तहज्जुद की नमाज़ हमेशा अदा किया करते थे। अगर बीमार होते तो तब भी छोड़ते नहीं थे। कुरआन करीम की तिलावत बहुत अच्छी आवाज़ में और वेदना से किया करते थे। कुरआन करीम की बहुत सारी आयतें उन को याद थीं। उन का अनुवाद और फिर व्याख्या भी याद करते थे। ताकि वे तब्लीग़ या प्रशिक्षण में काम आएं बल्कि कई घाना वाले कहते हैं कि उन के घरों में कुरआन करीम की एसी प्रतियां हैं जिन पर आडो साहिब के अपने हाथ के लिखे हुए नोट भी हैं । 2005 ई में उन्हें अपनी दोनों पत्नियों के साथ हज करने की तौफीक भी प्राप्त हुई। बड़े हंस मुख और साधारण आदमी थे। अल्लाह तआला उन के स्तर उंचे करे और दया का व्यवहार करे। उनके दस बेटे और बेटियां हैं। तीस पोते पोतियां हैं। अल्लाह तआला उन की नस्ल को भी नेकी और तक्वा पर स्थापित रखे और दृढ़ता से जमाअत से जुड़े रहने की तौफीक़ प्रदान करे अभी नमाज़ों के बाद जैसे कि मैंने कहा मैं उन की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ूंगा।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

तो उसने एक नान जो बहुत उत्तम था और चमक रहा था और बहुत बड़ा था जैसे चार नान के बराबर था अपने हाथ में पकड़ कर मुझे दिया और मुझे कहा कि यहनान लो। यह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ के दरवेशों के लिए है। अत: दस वर्ष के पश्चात् इस स्वप्न का प्रकटन हो गया। यदि कोई हृदय की शुद्धता से कोई क़ादियान में आकर रहे तो उसे मालूम होगा कि वही रोटी जो फ़रिश्ते ने दी थी दो समय हमें परोक्ष से मिलती है। कई परिवार वाले दो समय यहां से रोटी खाते हैं, कई अंधे और विकलांग और दरिद्र दो समय इस लंगरखाना से रोटी ले जाते हैं तथा हर ओर से अतिथि आते हैं तथा प्रतिदिन रोटी खाने वालों की औसत संख्या दो सौ, कभी तीन सौ और कभी अधिक होती है जो दो समय इस लंगर से रोटी खाते हैं तथा अतिथि सत्कार के अन्य व्यय पृथक हैं और औसत व्यय बहुत मितव्ययिता के साथ पन्द्रह सौ रुपए मासिक होता है किन्तु अन्य भी कई फुटकर व्यय हैं जो इसके अतिरिक्त हैं। यह ख़ुदा का चमत्कार मैं बीस वर्ष से देख रहा हूँ कि हमें परोक्ष से वह रोटी मिलती है और नहीं मालूम होता कि कल कहां से आएगी परन्तु आ जाती है। हज़रत ईसा के हवारियों की तो यह दुआ थी कि हे ख़ुदा! हमें आज जी रोटी दे परन्तु दयालु ख़ुदा हमें बिना दुआ के प्रतिदिन की रोटी दे रहा है और जैसा कि फ़रिश्ते ने कहा था कि यह रोटी तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ के दरवेशों के लिए है। इसी प्रकार दयालु ख़ुदा मुझे और मेरे साथ के दरवेशों को प्रतिदिन अपनी ओर से यह दा'वत भेजता है। अत: प्रतिदिन उसकी नई दा'वत हमारे लिए एक निशान है।

(हकीकतुल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 287)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

आज 23 मार्च है और यह दिन जमाअत में मसीह मौऊद दिवस के रूप में याद किया जाता है। जमाअतें इस लिए मसीह मौऊद दिवस के जलसे भी मनाती हैं। अगले शनिवार और रविवार सप्ताह का अन्त आ रहा है। बहुत सी जमाअतें यह जलसे आयोजित करेंगी और इसमें इस का इतिहास, पृष्ठभूमि और सब कुछ इसमें वर्णन किया जाएगा।

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के कुछ उपदेशों को प्रस्तुत करूंगा। जिन में आप ने मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के उद्देश्य और लक्ष्य का वर्णन फरमाया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के अपदेशों के हवाले से मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के उद्देश्य और आवश्यकता और स्थान का वर्णन और इस हवाले से जमाअत के लोगों को नसीहत।

आज अल्लाह तआला के फज़्ल से एक आवाज़ जो एक छोटी सी बस्ती से उठी थी दुनिया के 210 देशों में फैली हुई है। और यही आप की सच्चाई की दलील है दूर दराज़ के क्षेत्र जहां तीस चालीस साल पहले अहमदियत के पहुंचने की धारणा भी नहीं थी,न केवल वहां सन्देश पहुंचा बल्कि वहां इतने मज़बूत ईमान वाले अल्लाह तआला पैदा फरमा रहा है कि हैरत होती है।

बैनिन के एक गांव में नए अहमदियों के ईमान और श्रद्धा और दृढ़ता और अल्लाह तआला के समर्थन का ईमान वर्धक वर्णन।

हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि अगर हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को स्वीकार किया है तो क्या इस स्वीकार करने और बैअत करने का हक भी अदा करने वाले हैं? प्रायः मेरी समीक्षा में यह बात मैंने देखी है यह बात सामने आती है कि हम में से कई एसे हैं जो नमाज़ें भी पूरी तरह अदा नहीं करते। नमाज़ों की तरफ ध्यान नहीं है। इस्तिग़फार की तरफ तो बहुतों का बिल्कुल ध्यान नहीं है। एक दूसरे के अधिकारों को अदा करने की तरफ ध्यान नहीं है। यदि यह अवस्था है तो हम किस प्रकार कह सकते हैं कि हम नेक कर्म करने वाले हैं।

अतः बहुत फिक्र से हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला करे कि हम केवल रस्मी तौर पर मसीह मौऊद को मानने वाले न हों बल्कि मसीह मौऊद को स्वीकार करने का हक अदा करने वाले हों और प्रत्येक प्रकार के भीतरी और बाहरी फित्नों से बचने वाले हों। अल्लाह तआला हमेशा हमें अपनी पनाह में रखे और प्रत्येक बला और मुसीबत से बचाए।

23 मार्च 2018 ई से अंग्रेज़ी भाषा में साप्ताहिक अख़बार अलहकम के आरम्भ की ख़ुश ख़बरी, यह अख़बार इन्ट्रनेट पर उपलब्ध होगा, मोबाइल फोन और टेबलेटस के लिए इस का एप भी उपलब्ध होगा, अंग्रेज़ी पढ़ने वाले वर्ग को इस से अधिक से अधिक लाभ उठाने के नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 मार्च 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज 23 मार्च है और यह दिन जमाअत में मसीह मौऊद दिवस के रूप में याद किया जाता है। जमाअतें इस लिए मसीह मौऊद दिवस के जलसे भी मनाती हैं। अगले शनिवार और रविवार सप्ताह का अन्त आ रहा है। बहुत सी जमाअतें यह जलसे आयोजित करेंगी और इसमें इस का इतिहास, पृष्ठभूमि और सब कुछ इसमें वर्णन किया जाएगा।

इस समय, मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के कुछ उपदेशों को प्रस्तुत करूंगा। जिसमें आप ने मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के उद्देश्य और लक्ष्य का वर्णन फरमाया है। आपके दावे के बाद, तथाकथित मुस्लिम उलमा ने आपके ख़िलाफ जन साधारण को भड़ाकाने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया है। बहुत अधिक कोशिश की है। जिस सीमा तक वे जा सकते थे और अब भी यही कर रहे हैं। परन्तु अल्लाह तआला के समर्थन से आप की जमाअत तरक्की कर रही है और नेक फितरत लोग जमाअत में शामिल हो रहे हैं।

बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ख़ुदाई वादों के अनुसार अपने दावे का वर्णन फरमाते हुए और यह घोषणा फरमाते हुए कि मैं ही मसीह मौऊद हूं फरमाते हैं कि

"वास्तविक तौहीद और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शुद्धता, सम्मान और सत्यता और अल्लाह तआला की किताब के अल्लाह की तरफ से होने पर अत्याचार एवं जुल्म के तरीके से हमले किए गए हैं तो क्या ख़ुदा तआला के सम्मान की मांग नहीं होना चाहिए थी कि इस सलीब को तोड़ने वाले को अवतरित करे?(क्योंकि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उस ज़माने पर हमले इसाइयों की तरफ से हो रहे थे।) फरमाते हैं "क्या ख़ुदा तआला अपने वादे اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ(अलहिज्र 10) को भूल गया? निःसन्देह याद रखो कि अल्लाह तआला के वादे सच्चे हैं। उस ने अपने वादा के अनुसर दुनिया में एक नज़ीर भेजा। दुनिया ने उस को स्वीकार न किया परन्तु ख़ुदा तआला उस स्वीकार करेगा। और बड़े ज़ोरदार हमलों से उस की सच्चाई को प्रकट करेगा।" आप फरमाते हैं कि " मैं तुम्हें सच-सच बताता हूं कि मैं ख़ुदा तआला के वादा के अनुसार मसीह मौऊद हो कर आया हूं। चाहो तो स्वीकार करो। चाहो तो रद्द करो परन्तु तुम्हारे रद्द करने से कुछ न होगा। ख़ुदा तआला ने जो इरादा फरमाया है वह हो कर रहेगा। क्योंकि ख़ुदा तआला ने पहले से बराहीन में फरमा दिया है صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَ كَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا

(मल्फूज़ात भाग1 पृष्ठ 206 प्रकाशन1985 ई यू, के)

अर्थात अल्लाह और उस के रसूल की बात पूरी हुई और ख़ुदा का वादा पूरा

हुआ।

फिर एक मौके पर आपने फरमाया:

"नबुव्वत की कसौटी पर इस सिलसिला को अज़माएं और फिर देखें हक किस के साथ है। काल्पनिक उसूलों और विचारों से कुछ नहीं बनता। और न मैं अपनी सच्चाई काल्पनिक बातों से करता हूं। मैं अपने दावा को नबुव्वत की कसौटी पर प्रस्तुत करता हूं। फिर क्या कारण है कि इसी उसूल पर इस की सच्चाई को परखा न जाए।" फरमाते हैं "जो दिल खोल कर मेरी बातें सुनते हैं मैं विश्वास रखता हूं कि लाभ उठाएंगे और स्वीकार कर लेंगे। परन्तु जो दिल में द्वैष और हसद रखते हैं उन को मेरी बातें कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकेंगी। उन का तो अहवल जैसा उदाहरण है।"(अर्थात वह आदमी जो भेंगा(जिस की नज़र ख़राब हो) होता है जिस को एक के स्थान पर दो दिखाई देते हैं।)" उस को चाहे कितनी ही दलीलें दी जाएं कि दो नहीं एक है वह स्वीकार ही नहीं करेगा। कहते हैं "(आप उदाहरण देते हैं।) कि एक अहवल सेवक था।"(भेंगा आदमी किसी की सेवा करने वाला था।)" आक़ा ने (उसे को) कहा कि अन्दर से आइना ले आओ। वह गया और आ कर कहा कि अन्दर तो दो आइने पड़े हैं। कौन सा ले आओं? आक़ा ने कहा कि एक ही है दो नहीं हैं। अहवल ने कहा कि तो क्या मैं झूठा हूं। (उस के) आक़ा ने कहा अच्छा एक को तोड़ दे। जब तोड़ा गया तो उस को पता चला कि वास्तव में मेरी ग़लती थी।" आप फरमाते हैं "परन्तु इन अहवलों का जो मेरे मुकाबला में हैं क्या जवाब दूं।" फरमाते हैं कि "अत: हम देखते हैं कि ये लोग बार बार अगर कुछ पेश करते हैं तो हदीस का और जिस को स्वंय सह लोग ज़न के स्तर से आगे नहीं मानते। उन को मालूम नहीं के एक समय आएगा कि इन के कूड़ा कर्कट पर लोग हंसी करेंगे।"(जो ऊट पटांग बातें ये लोग करते हैं उन पर लोग हंसी करेंगे।) फरमाते हैं "यह प्रत्येक सच्चाई को जानने वाले का हक है कि वह हम से दावा का सबूत मांगे।" (बड़ी सहीह बात है दावा का सबूत मांगना चाहिए। इस बात का हक है।) "इस के लिए हम वही प्रस्तुत करते हैं जो नबियों ने पेश किया।" आप फरमाते हैं कि" कुरआन की आयतों और हदीसों और अक्ली दलीलें अर्थात वर्तमान ज़रूरतें जो दावा करने वाले को चाहती है।। फिर वे निशान जो ख़ुदा ने मेरे हाथ पर प्रकट किए मैंने एक नक्शा बना दिया है।" आप फरमाते हैं कि "मैंने एक नक्शा बना दिया है इस में 150 के लगभग निशान दिए गए हैं जिन के गवाह एक तरह से करोंड़ों इंसान हैं। बेहूदा (व्यर्थ) बातें प्रस्तुत करना नेक लोगों का काम नहीं।" फरमाया कि " आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसीलिए फरमाया था कि वह हकम हो कर आएगा।"(अर्थात मसीह मौऊद जब आएगा तो मसीह मौऊद होगा) "उस का फैसला स्वीकार करो।"(वह फैसला करने वाला होगा उस का फैसला स्वीकार करो।)" जिन लोगों के दिल में शरारत होती है वे चूंकि स्वीकार करना नहीं चाहते हैं इस लिए व्यर्थ दलीलें और आरोप प्रस्तुत करना नहीं चाहते। मैं विश्वास करता हूं कि अगर मैं झूठ बोलता तो वह मुझे हलाक कर देता। परन्तु मेरा सारा कारोबार उस का अपना कारोबार है और मैं उस की तरफ से आया हूं। मेरा इंकार उस का इंकार है। इसलिए वह ख़ुदा मेरी सच्चाई प्रकट कर देगा।"

(मल्फ़ूात भाग 4 पृष्ठ 34-35 संस्करण 1985 इंग्लैंड)

फिर इस बात को समझाते हुए कि मसीह मौऊद का इंकार(अस्वीकृति) और विरोद्ध का परिणाम अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इंकार तक तुम लोगों को ले जाएगा। आप फरमाते हैं कि:

"मेरा इनकार मेरा इंकार नहीं है बल्कि यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार है। क्योंकि जो मेरा इंकार करता है वह मेरे इंकार से पहले अल्लाह तआला की पनाह, अल्लाह तआला को झूठा ठहरा लेता है। जब कि वह देखता है कि भीतरी और बाहरी फसाद सीमा से बढ़े हुए हैं और ख़ुदा तआला ने वादा के बावजूद कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحَافِظُوۡنَ उन के सुधार का कोई प्रबन्ध न किया। जब कि वह इस बात पर ज़ाहिर में ईमान लाता है कि ख़ुदा तआला ने आयत इस्तिख़लाफ में वादा किया था मूसवी सिलसिला की तरह मुहम्मदी सिलसिला में भी ख़ुल्फा का सिलसिला स्थापित कर देगा। परन्तु उस ने अल्लाह की पनाह इस वादा को पूरा न किया और इस समय कोई ख़लीफा इस उम्मत में नहीं। और ने केवल यहां तक ही बल्कि इस से भी इंकार करना पड़ेगा कि कुरआन शरीफ ने जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मूसा का मसील (प्रतिरूप) बताया है यह भी सहीह नहीं है। अल्लाह की पनाह। क्योंकि इस सिलसिला की पूर्ण रूप से समानता के लिए आवश्यक था कि इस चौदहवीं सदी में इसी उम्मत में से एक मसीह पैदा होता। इसी प्रकार जिस तरह मूसवी सिलसिला में चौदहवीं सदी में एक मसीह आया और इसी प्रकार कुरआन शरीफ की इस आयत को भी झुठलाना पड़ेगा जो कि اٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ(अल्जुम्अ: 4)में एक आने वाले अहमदी प्रतिरूप की खबर देती है और इस तरह से कुरआन शरीफ की कई आयतें हैं जिनकी तक़ज़ीब अनिवार्य होगी बल्कि मैं दावा करता हूं कि अल्हम्दो से लेकर वन्नास तक सारा कुरआन छोड़ना पड़ेगा। फिर सोचो कि क्या मेरा इंकार कोई साधारण काम है? यह मैं अपने आप नहीं कहता। ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि सच्चाई यही है कि जो मुझे छोड़ेगा और मेरा इंकार करेगा यदि ज़बान से न करे परन्तु अपने व्यवहार से करे उस ने सारे कुरआन का इंकार कर दिया और ख़ुदा को छोड़ दिया। इस की तरफ मेरे एक इल्हाम में भी इशारा है"(अल्लाह तआला ने आप को फरमाया कि) اَنۡتَ مِنِّیۡ وَاَنَا مِنۡکَआप फरमाते हैं कि" नि:सन्देह मेरे इंकार से ख़ुदा का इंकार अनिवार्य आता है और मेरे स्वीकार करने से ख़ुदा तआला की तस्दीक होती है उस की हस्ती पर मज़बूत ईमान पैदा होता है। और फिर मेरा इंकार मेरा इंकार नहीं है। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार है। अब कोई इस से पहले के मेरा इंकार और झुठलाने की साहस करे ज़रा अपने दिल में सोचे और फत्वा पूछे कि वह किस का इंकार करता है।?"

इस बात को और अधिक खोलते हुए कि मसीह के इंकार से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार अनिवार्य होता है इस का कारण क्या है? किस प्रकार मसीह मौऊद के इंकार से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार लाज़िम आता है। आप फरमाते हैं

" रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्यों इंकार होता है? (अर्थात मसीह मौऊद के इंकार से क्यों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इंकार होता है।) आप फरमाते हैं कि" इस तरह से कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो वादा फरमाया था कि प्रत्येक सदी के सिर पर मुजद्दिद आएगा वह अल्लाह की पनाह झूठा निकला फिर आप ने जो اِمَامُکُمۡ مِنۡکُمۡफरमाया था वह भी अल्लाह की पनाह झूठा निकला। और आप ने जो सलीब के फित्ना के समय जो एक मसीह महदी के आने की ख़ुश ख़बरी दी थी वह भी अल्लाह की पनाह ग़लत निकली क्योंकि फित्ना तो मौजूद हो गया परन्तु वह आने वाला इमाम न आया। अब इन बातों को जब कोई स्वीकार करेगा। व्यावहारिक रूप से क्या वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई को मानने वाला होगा या इंकार करने वाला?" आप फरमाते हैं " अत: मैं फिर खोल कर कहता हूं कि मेरा इंकार आसान काम नहीं है मुझे काफिर कहने से पहले ख़ुद काफिर बनना होगा। मुझे धर्म विमुख और गुमराह कहने में देर होगी। परन्तु पहले अपनी गुमराही और बदनामी को स्वीकार कर लेना होगा। मुझे कुरआन और हदीस को छोड़ने वाला कहने के लिए पहले ख़ुदा कुरआन तथा हदीस को छोड़ना होगा और फिर भी वही छोड़ेगा।" मैं गुमराह नहीं बल्कि महदी हूं। मैं काफिर नहीं बल्कि اَنَاۡ اَوَّلُ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ का प्रतिरूप हूं। और जो कुछ मैं कहता हूं ख़ुदा ने मुझे पर प्रकट किया है कि सच है। जिस को ख़ुदा पर विश्वास है, जो कुरआन और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सच्चा मानता है उस के लिए यही दलील काफी है कि मेरे मुंह से सुन कर ख़ामोश हो जाए। परन्तु जो दिलेर और मुंह फट है उस का क्या इलाज। ख़ुदा ख़ुद उस को समझाएगा।" (आप ये सब बातें एक आए हुए मेहमान को समझा रहे थे।) आप ने फरमाया कि" मेरे मामले में जल्दी से काम न लें। बल्कि नेक निय्यत और बुरे विचारों से ख़ाली होकर सोचें।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 14 से 16 प्रकाशन 1985 ई यू, के)

फिर एक अवसर पर आप फरमाते हैं:

"अत: अगर इन लोगों के दिल में हसद और ज़िद नहीं तो मेरी बात सुनें और मेरे पीछे चलें। फिर देखें कि क्या ख़ुदा तआला उन को अन्धेरे में छोड़ता है अथवा नूर की तरफ ले जाता है? मैं विश्वास रखता हूं कि जो धैर्य और सच्चाई से मेरे पीछे चलता है वह हलाक नहीं किया जाएगा बल्कि वही इसी ज़िन्दगी से हिस्सा लेगा जिस को कभी फना नहीं।" (अर्थात इस दुनिया में भी सम्मान पाने वाला है और फिर आख़री ज़िन्दगी में भी अल्लाह तआला इस पर इनाम करेगा।)

आप फरमाते हैं, "जिस का दिल साफ है और ख़ुदा तआला का भय उस में है उस के सामने दोबारा आने के बारे में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ही फैसला प्रस्तुत करता हूं। वह मुझे समझा दें कि यहूदियों के सवाल के उत्तर में (कि मसीह से पहले एलिया का आना आवश्यक है।) जो कुछ मसीह ने कहा है वह सही है या नहीं? यहूदी तो अपनी किताब पेश करते थे कि एलिया का मलाकी नबी की किताब

में आना लिखा है। एलिया के प्रतिरूप आने का उल्लेख नहीं।" (एलिया के स्वयं आने का उल्लेख है। प्रतिरूप का उल्लेख तो नहीं। उस के नमूने पर किसी आने वाले का तो उल्लेख नहीं लिखा) आप फरमाते हैं कि "मसीह यह कहते हैं कि आने वाला यही यूहन्ना है चाहो तो उसे स्वीकार करो। अब किसी इंसाफ करने वाले के सामने फैसला रखो और देखो कि डिग्री किस को देता है) (ज़हरी बात पर अगर निर्णय कराना है किसी भी जज के सामने रख दो और देखो वह डिग्री किसे देता है।) "वह निश्चित यहूदियों के पक्ष में निर्णय देगा।"(क्योंकि ज़ाहरी रूप से जो लिखा हुआ है उस के अनुसार फैसला होगा परन्तु आप फरमाते हैं कि यह फैसला सहीह नहीं है क्योंकि) "लेकिन एक मोमिन जो ख़ुदा तआला पर ईमान लाता है वह जानता है कि ख़ुदा तआला के नबी किस प्रकार आते हैं। वह विश्वास करेगा कि मसीह ने जो कुछ कहा और किया वह ठीक है।" आप फरमाते हैं कि "अब इस समय यही मामला है या कुछ और है?" "अगर ख़ुदा को भय होता को शरीर कांप जाता यह कहते हुए कि यह दावा झूठा है अफसोस और हैरत का स्थान है कि उन लोगों में उतना भी ईमान नहीं जितना उस आदमी का था जो फिरऔन की क़ौम का था जिस ने यह कहा था कि अगर यह झूठ है तो अपने आप हलाक हो जाएगा। मेरे बारे में अगर तक्वा से काम लिया जाता तो इतना ही देते और देखते कि ख़ुदा तआला मेरा समर्थन कर रहा है या नहीं या मेरे सिलसिला को मिटा रहा है।

(मल्फूज़ात जिल्द 4 पृष्ठ 30-31। संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

आज अल्लाह तआला के फज़ल से वह एक आवाज़ जो कादियान की छोटी सी बस्ती से उठी थी दुनिया के 210 देशों में फैल गई है, और यही आप की सच्चाई की दलील है। दूरदराज़ के क्षेत्रों में जहां तीस साल पहले अहमदियत पहुंचने की कोई अवधारणा नहीं थी, न केवल संदेश पहुंचा था, बल्कि वहां इतने ईमान वाले अल्लाह तआला पैदा फरमा रहा है कि हैरत होती है। एक घटना भी वर्णन करता हूं।

बेनिन अफ्रीका का एक छोटा देश है। वहां 2012 ई में एक जमाअत का गठन हुआ था। वहां के एक गांव के एक अहमदी, उनका नाम इब्राहीम साहिब है उन्होंने अहमदियत स्वीकार की इससे पहले वह मुसलमान थे और बहुत ज्ञान रखने वाले थे और अहमदियत को स्वीकार करने के बाद वह ईमानदारी और वफादारी में बढ़ने लगे। अपने रिश्तेदार भाइयों और बहनों को तब्लीग़ करना शुरू की। उनके भाई ने उन की तब्लीग़ से तंग आकर कि यह तब्लीग़ कर के हमारे धर्म से हटा रहा है, उन से लड़ाई करना शुरू कर दिया परन्तु यह तब्लीग़ करते रहे। लोगों को अहमदियत का सन्देश, वास्तविक इस्लाम का सन्देश पहुंचाते रहे और इस प्रकार उनके प्रयासों से आस पास के तीन गांव अल्लाह तआला के फज़ल से अहमदियत में शामिल हो गए। तो इब्राहीम साहबि के भाई ने अपने अक दोस्त के साथ मिलकर उन के कत्ल का षडयन्त्र किया, कि यह तो अहमदियत फैलाता जा रहा है इस का एक ही इलाज है कि इन को कत्ल कर दिया जाए। इब्राहीम साहिब कहते हैं कि मैंने सपने में देखा कि उन का बड़ा भाई और उन का दोस्त कोई गड्डा खोद कर उस में कुछ डाल रहे हैं। वह कहते हैं कि सपने के तीन दिन बाद ही इन के बड़े भाई का दोस्त अचानक बीमार हुआ और उस की मौत हो गई। इस पर उन के भाई ने कहना शुरू कर दिया कि यह अहमदी जो है इस ने मेरे दोस्त पर कोई जादू टोना कर दिया है। कुछ समय बाद यह कहते हैं कि फिर मैंने सपना देखा कि उसका भाई एक पेड़ से ख़ुद को माप रहा था। यह इस क्षेत्र में रिवायत है कि जब कोई मर जाता है, उसके शरीर को मिट्टी में दफन करने के लिए एक पेड़ की शाखा से मापा जाता है, ताकि कब्र को उसके आकार के अनुसार बनाया जाए। कहते हैं कि कुछ दिनों के बाद उनके बड़े भाई के गर्भवती बीवी बीमार हो गई और दो दिनों के भीतर उस की मृत्यु हो गई और उसके बच्चे भी बीमार होने लगे। उन्हें कोई अंतर नहीं पड़ रहा था। उनके भाई ने मशहूर कहा कि यह एक जादू है और स्थानीय राजा, जो सरदार था, से उस की शिकायत की। उस से मदद के लिए कहा उस ने कुछ पैसे मांगे कि यह ले आओ तो मैं मदद करता हूं। ठीक है, उनके भाई ने रकम अदा कर दी। राजा ने इब्राहीम को बुलाया और जब वह गए, तो बहुत क्रोध से उस ने कहा कि यह क्या तमाशा तुम ने बना रखा है। एक नया धर्म धारण किया है और नया धर्म शुरू किया है इसे छोड़ दो और तौब: करो, अन्यथा तुम कल का सूरज नहीं देखोगे। तुम्हारे पर कल का सूरज नहीं चढ़ेगा। इब्राहीम साहिब कहने लगे कि धर्म तो मैंने सोच समझ कर धारण किया है उस को तो मैं नहीं छोड़ सकता और रहा बात मरने की तो जीवन और मृत्यु अल्लाह तआला के हाथ में है। इस पर चीफ या बादशाह ने कहा कि इस इलाके का ख़ुदा मैं हूं। मैं जो चाहता हूं करता हूं और तुम लोग अच्छी तरह जानते हो कि मैं क्या फैसला करने लगा हूं और जिस को मैं यह कह दूं कि वह कल मर जाएगा तो वह ज़रूर मर जाता है। इब्राहीम साहिब ने कहा, "ठीक है, तुम अपने पारंपरिक लोगों से कहते होगे लेकिन मैं इस बात में तुम्हें कुछ नहीं कहता परन्तु मैं धर्म नहीं छोड़ूंगा। क्योंकि वास्तविकता यही है और सच्चा इस्लाम यही है। इस पर बादशाह को और क्रोध आया और उस ने अपने लोगों को कहा कि इन को ले जाकर बन्द कर दो। जब वह इब्राहीम साहिब को ले जा रहे थे, तो उन्होंने लोगों से कहा कि तुम मेरे बीच में न रहो और इस मामले को छोड़ दो। मुझे इसमें बजाय बंद करने के जाने दो। ख़ैर वे लालची लोग होते हैं कुछ रकम लेकर उन्होंने छोड़ दिया। उस राजा ने या बादशाह ने उन पर सुबह सूर्योदय क्या करवाना था। अगले दिन सूचना प्राप्त हुई कि बदशाह को फालिज (पक्षघात) हो गया, और वह हिलने जुलने के योग्य भी नहीं रहा और दो दिन बाद वह मर गया। यह देखकर, उनके बड़े भाई जो उनके विरोध में थे, उन्होंने परिवार से कहा कि हमारी सुलह करवा दें । उन्होंने कहा, "मेरी तो किसी से लड़ाई थी ही नहीं। हम तो शांति चाहने वाले हैं और इस्लाम का सच्चा संदेश भी यही है। तो इस चीफ के मरने का निशान देख कर वहां इस क्षेत्र में बहुत प्रभाव पड़ा और चर्चा हुई। अहमदियत की सच्चाई साबित हुई। तो यह चीज़ें जो हैं अब भी अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सच्चाई में साबित हो रही हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं

"देखो मैं ख़ुदा तआला की कसम खा कर कहता हूँ, मेरी सत्यता में हज़ारों निशान दिखाई देते हैं और हो रहे हैं और भविष्य में होंगे।" (यह बंद नहीं हो गए आप फरमाते हैं यह भविष्य में भी होंगे।) "यदि यह एक मानवीय योजना होती, तो वह इतना समर्थन और सहायता हरगिज़ न होती।" (हकीकतुल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 48) यह अल्लाह तआला की ही योजना है जिस का वह समर्थन कर रहा है।

एक मौके पर हज़रत मुस्लेह और मसीह की आवश्यकता का वर्णन करते हुए आप कहते हैं कि:

"जैसा कि हर फसल काटने का समय है ऐसा ही अब फ़सादों को दूर देने का समय आ गया है।" (जो फसाद दुनिया में फैले हुए हैं जो बुराईयां फैली हुई हैं उन्हें दूर करने का समय आ गया है।) आप कहते हैं।" सच्चे का अपमान और गुस्ताख़ी चरम सीमा तक पहुंच गई है आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान, (आफ फरमाते हैं अल्लाह की पनाह)"मक्खी और भूंड जितना भी नहीं रहा। भूंड से भी इंसान डरता है।"(एक भिड़ जो है।)" और चींटी से भी इंसान डरता है लेकिन ह्रज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बुरा कहने में नहीं झिझकता। كَذَّبُوْا بِاٰيَاتِنَاك का मिसद्का हो रहे हैं। जितना उन का मुंह खुल सकता है उन्होंने खोला और मुहं फाड़ फाड़ कर बुरा भला कहा। अब वास्तव में वह समय आ गया है कि ख़ुदा तआला उस को दूर करे। ऐसे समय में वह हमेशा एक इंसान को पैदा किया करता है जो उस के सम्मान और प्रताप के लिए बहुत अधिक जोश रखता है। इस प्रकार के आदमी को भीतरी मदद का सहारा होता है। वास्तव में अल्लाह तआला आप ही सब कुछ करता है परन्तु उस का पैदा करना एक सुन्नत को पूरा करता है لَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا अब वह समय आ गया है जब अल्लाह तआला ने अपनी सुन्नत के अनुसार मुझे भेजा है।

आप फरमाते है " ख़दा तआला की प्रकृति पर नज़र डालने से पता चलता है कि जब बात सीमा से गुज़र जाती है तो आसमान पर तैय्यारी की जाती है। यही उस का निशान है कि तैय्यारी का समय आ गया है। सच्चे नबी रसूल और मुजद्दिद की निशानी यही होती है कि वह समय पर आए और ज़रूरत को पूरा करे। लोग कसम खा कर कहेंगे क्या यह समय नहीं कि आसमान पर कोई तैय्यारी हो?(आप पूछ रहे हैं कि लोग सवाल कर रहे हैं कि कसम खाकर बताओ कि क्या यह समय नहीं है। (वह ज़माना भी था और आज भी लोग यही कह रहे हैं कि हमें किसी सुधारक की ज़रूरत नहीं है बल्कि पाकिस्तान में तो मौलवी ख़ुद यह कहते हैं परन्तु मसीह मौऊद का इंकार करते हैं।) परन्तु याद रखो कि अल्लाह तआला आप ही सब कुछ करता है। हम और हमारी जमाअत अगर सब के सब कमरों में बैठ जाएं तब भी काम हो जाएंगे और दज्जाल का पतन हो जाएगा تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ (इसी तरह दिन आपस में फिरा करते हैं) फरमाया कि "इस का कमाल बताता है कि अब इस के पतन के दिन निकट हैं।"(किसी चीज़ को जब उन्नति प्राप्त हो जाए, जब यह चरम को पहुंच जाए और वह समझने लगे कि मैं सब ताकतों का मालिक हो गया हूं और सारी तरक्कियां मेरे हाथ में हैं तो फिर वह जो तरक्की जो है उस पर पहुंच कर वहां से पतन शुरु हो जाता है। इसी प्रकार अब इन ताकतों का भी पतन

शुरू हो गया है चाहे वह इस्लाम के विरुद्ध ताकतें हों या वे लोग जो अहमदियत के विरुद्ध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के विरुद्ध हैं।) आप फरमाते हैं कि "इस की उन्नति दिखाती है कि वह अब पतन की तरफ देखेगा।"(बहुत अधिक ऊंचाई पर पहुंच गया है अब यह प्रकट कर रहा है कि वह नीचे की तरफ आएगा।)"उस की आबादी उस की बर्बादी का निशान है" (वह समझता है कि उस की आबादी और ताकत बहुत अधिक है तो अब यह बर्बादी का निशान बन जाएगी।)" हां ठण्डी हवा चल रही है अल्लाह तआला के काम धीरे से होते हैं।"(ठीक है निशान शुरू हो गया है। अल्लाह तआला के काम धीरे से होते हैं और वे इन्शा अल्लाह हो जाएंगे।)" अगर हमारे पास कोई दलील न भी होती फिर भी ज़माने के हालात पर नज़र कर के मुसलमानों पर अनिवार्य था कि वह दीवानों की तरह फिरते और तलाश करते कि मसीह अब तक क्यों नहीं सलीब को तोड़ने के लिए आया। उन को यह न चाहिए था कि उसे अपने झगड़ों के लिए बुलाते।" (इस्लाम की ग़ैरत थी तो इस्लाम की रक्षा के लिए बुलाते, न कि झगड़ों को हल करने के लिए बुलाते) फरमाया "क्योंकि इस का काम सलीब को तोड़ना था।"

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 396 से 398 संस्करण 1985 ई यू. के)

इसी तरह एक जगह फरमाया कि " नास्तिकता भी फैल रही है और मैं उस को दूर करने के लिए भी आया हूं।"

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 7, पृष्ठ 28 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

आप फरमाते हैं,"यही कारण है कि उसका नाम मसीह मौऊद है। यदि मुल्लाओं को बनी इस्राईल की भलाई और सामने होता तो वह हरगिज़ इस प्रकार न करते। जैसा कि हम से कर रहे हैं। उन को सोचना चाहिए था कि उन्होंने हमारे विरुद्ध फत्वा लिख कर क्या बना लिया। है जिसे ख़ुदा तआला ने कहा है कि हो जाए उसे कौन कह सकता है कि न हो।"(फत्वा लिखा तो उस का क्या लाभ हुआ। जमाअत तो उसी प्रकार तरक्की कर रही है अल्लाह तआला ने फैसला किया हुआ है कि हो जा तो वह हो जाता है। फिर कोई उस को रोक नहीं सकता।)

आप फरमाते हैं "ये लोग जो हमारे विरोद्धी हैं ये भी हमारे नौकर चाकर हैं किसी न किसी रंग में हमारी बात पूर्व तथा पश्चिम में पहुंचा देते हैं।"

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 1, पृष्ठ 398 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

जो विरोध कर रहे हैं वास्तव में विरोध के द्वारा अहमदियत और वास्तविक इस्लाम के संदेश को पहुंचा रहे हैं, क्योंकि इस तरह भी लोगों को ध्यान पैदा होता। बहुत से लोग पत्र लिखते हैं और संपर्क करते हैं कि मौलवी के विरोध के कारण या अमुक स्थान पर आप के विरुद्ध बातें हो रही थीं। उन के कारण हमें जिज्ञासा पैदा हुई और हम ने अनुसंधान किया। और अब तो इंटरनेट के माध्यम से हर जगह जमाअत का लिट्रेचर भी उपलब्ध है और कई चीजें उपलब्ध हैं। तुलना भी किया जा सकता है। तो अनुसंधान कर के अब हम जमाअत में शामिल होना चाहते हैं। तो मौलवियों का, विपक्ष का यह माध्यम भी तब्लीग़ का स्रोत बन रहा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ लोगों की इस आपत्ति का जवाब देते हुए कि हम इस्लाम की शिक्षा का पालन कर रहे हैं और पहले से ही जो इतने संप्रदाय हैं तो एक नया समुदाय बनाने की ज़रूरत क्या है और आप की जमाअत में शामिल होने की ज़रूरत क्या है? आप फरमाते हैं कि कभी-कभी हमारे अहमदी भी आलोचकों की इन बातों को सुन कर ख़ामोश हो जाते हैं। उस ज़माना में और आजकल भी कुछ इसी प्रकार ख़ामोश हो जाते हैं कि क्या जवाब दें।

आप फरमाते हैं"ऐसे कई लोग हैं जो यह आरोप लगाते हैं कि इस सिलसिला की क्या ज़रूरत है? क्या हम नमाज़ रोज़ा नहीं करते हैं? वे इस तरह से धोखा देते हैं। और कुछ आश्चर्य नहीं कि कुछ लोग जो अज्ञान होते हैं इस प्रकार की बातों को सुन के धोखा खा जाएं और उन के साथ मिल कर कह दें कि जिस अवस्था में हम नमाज़ पड़ते हैं , रोज़े रखते हैं और वज़ीफे करते हैं फिर क्यों यह फूट डाल दी?(क्या नया फिर्का बना दिया और फूट डाल दी। हम नमाज़ रोज़ा कर रहे हैं तो तुम्हारे अन्दर शामिल होने की, एक नया फित्ना फसाद पैदा करने की क्या ज़रूरत है।) आप फरमाते हैं "याद रखो इस प्रकार की बातें कम ज्ञान और मअरफत की कमी के कारण होती हैं। मेरा अपना काम नहीं यह फूट अगर डाली है तो अल्लाह तआला ने डाली है। जिस ने इस सिलसिला को स्थापित किया है"(मैंने तो स्थापित नहीं किया यह तो अल्लाह तआला ने स्थापित किया है।)" क्योंकि ईमान की अवस्था कमज़ोर होते होते यहां तक पहुंच गई है कि ईमान की ताकत समाप्त हो गई है और अल्लाह तआला चाहता है कि वास्तविक ईमान की रूह फूंके जो इस सिलसिले के माध्यम से उस ने चाहा है। इस अवस्था में उन लोगों का आरोप व्यर्थ और बेकार है। अत: याद रखो कि इस प्रकार की शंका हरगिज़ हरगिज़ किसी के दिल में नहीं आनी चाहिए और अगर पूरे ध्यान और चिन्ता से काम लिया जाए तो यह शंका किसी के दिल में आ ही नहीं सकती। ध्यान से काम न लेने का कारण ही शंका आती है। जो ज़ाहरी अवस्था पर नज़र कर के कह देते हैं कि हम से जब यह कहा गया कि दूसरे मुसलमान भी ज़ाहिर में नमाज़ पढ़ते हैं और कलिमा पढ़ते हैं और रोज़े रखते हैं और नेक काम करते हैं और नेक मालूम होते हैं फिर इस नए सिलसिले की क्या आवश्यकता है?" आप फरमाते हैं "ये लोग ज़ाहिर में हमारी बैअत में शामिल हैं इस प्रकार की शंकाए और आरोप सुन कर लिखते हैं कि हम को इस का उत्तर नहीं आया। इस प्रकार के ख़त पढ़ कर मुझे इस प्रकार के लोगों पर अफसोस और रहम आता है कि उन्होंने हमारे आने के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझा। वे केवल यह देखते हैं कि रस्म के तौर पर लोग इस्लाम की बातों का पालन करते हैं और इलाही फर्ज़ अदा करते हैं हालांकि वास्तविकता की रूह उन में नहीं होती।"(केवल फर्ज़ के तौर पर नहीं करना चाहिए। ज़ाहरी रूप से नहीं करना चाहिए बल्कि वास्तविक रूप से इबादत करनी चाहिए और दूसरे फर्ज़ों को भी अदा करना चाहिए।)"इस लिए यह बातें जादू की तरह काम करती हैं।"(शंकाए आ जाती हैं और जो बातें कर रहे होते हैं उन का प्रभाव भी उन पर जादू की तरह होता है।)" वे ऐसे समय में नहीं सोचते कि हम वास्तविक ईमान पैदा करना चाहते हैं जो इंसान को गुनाह की मौत से बचा लेता है और इन रस्मों और आदतों का अनुसरण करने वालों में वह बात नहीं। उन की नज़र ज़हिर पर है वास्तविकता पर नहीं। उन के हाथ में छिलका है मग़ज़ नहीं।"(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 237 से 239 प्रकाशन यू. के) अत: बेशक ज़ाहरी काम तो मुसलमान करते हैं परन्तु रूप उन में नहीं होता। तक्वा नहीं है।

इस बात को वर्णन करते हुए कि अगर मुसलमान कहलाने वालों के कर्म, नेक कर्म हैं तो फिर उन के पवित्र नतीजे क्यों नहीं निकलते।

आप वर्णन फरमाते हैं "ये लोग"(अर्थात कुछ मुसलमान)" समझते नहीं हैं कि हम में कौन सी बात इस्लाम के विरुद्ध है। हम لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहते हैं और नमाज़ें भी पढ़ते हैं और रोज़े के दिनों में रोज़े भी रखते हैं और ज़कात भी देते हैं।"(अर्थात ये लोग जो जमाअत से बाहर हैं। कोई इस प्रकार की बात तो है नहीं कि तुम्हारे साथ जुड़ कर हम ज़्यादा अच्छी तरह से इस्लाम की वास्तविकता को समझ जाएं क्योंकि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहते हैं। नमाज़ें हम पढ़ते हैं रोज़े हम रखते हैं। ज़कात भी हम देते हैं। आप फरमाते हैं कि यही कुछ नहीं।) फरमाया कि" परन्तु मैं कहता हूं कि इन के सारे कर्म नेक कर्मों के रूप में नहीं हैं बल्कि केवल एक छिलके की तरह हैं जिन में कोई मगज़ नहीं है। वरना अगर नेक कर्म हैं तो इन के नेक परिणाम क्यों नहीं निकलते।? नेक कर्म तो तब हो सकते हैं कि वे प्रत्येक प्रकार के फसाद और मिलावट से पवित्र हों परन्तु उन में ये बातें कहां हैं? मैं कभी विश्वास नहीं कर सकता कि एक आदमी मोमिन और मुत्तकी हो और नेक कर्म करने वाला हो और सच्चों का दुश्मन हो हालांकि ये लोग हम को नास्तिक कहते हैं और ख़ुदा तआला से नहीं डरते। मैं ने अल्लाह तआला की कसम खा कर वर्णन किया कि मुझे ख़ुदा तआला ने भेजा है अगर अल्लाह तआला का कुछ सम्मान उन के दिल में होता तो वे इंकार न करते और उस से डर जाते कि ऐसा न हो कि हम ख़ुदा तआला के नाम को अपमानित करने वाले ठहरें। परन्तु यह तब होता जब उन में वास्तविक और हकीकी ईमान अल्लाह तआला पर होता और बदला के दिन से डरते لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ पर उन का अनुकरण होता।(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 343 प्रकाशन 1985 ई यू. के) अर्थात वह बात न करो जिस का तुम्हें ज्ञान नहीं।

इस बात को स्पष्ट करते हुए कि मसीह मौऊद के आगमन का उद्देश्य अन्दरूनी और बाहरी फित्नों और हमलों से इस्लाम को सुरक्षित करना है और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी इस बात की ख़बर दी है। आप फरमाते हैं:

" आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आख़री ज़माना के बारे में ख़बर दी थी कि उस समय दो तरह के फित्ने होंगे। एक अंदरूनी और दूसरा बैरूनी। अंदरूनी फित्ना यह होगा कि मुसलमान सच्ची हिदायत पर स्थापित न होंगे और शैतानी कामों के नीचे आ जाएंगे।" (नेक कर्म इन में कोई न होगा।)" जूआ, ज़ना शराब पीना, और प्रत्येक प्रकार के दुराचार में पीड़ित हो कर अल्लाह की सीमा से निकल जाऐंगे और ख़ुदा तआला की मनाही की परवाह नहीं करते। नमाज़ रोज़ा को छोड़ देंगे और अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना की जाएगी और कुरआन के आदेशों के साथ हंसी ठट्ठा किया जाएगा।"(यह तो भीतरी फित्ना है मुसलमानों की व्यावहारिक अवस्था बिगड़ गई है। अधिकांश मुसलमानों की अवस्था यही है आपस में भी आप देख लें मुसलमान दुनिया में भी किस तरह एक दूसरे पर अत्याचार हो

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 26 April 2018 Issue No. 17

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 9/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

रहे हैं।) और "बाहरी फित्ना यह होगा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात पर आरोप लगाए जाएंगे।" (और यह भी आज कल बढ़ कर हो रहा है।) "और प्रत्येक प्रकार के दिल तोड़ने वाले हमलों से इस्लाम का अपमान और विध्वंस की कोशिश की जाएगी। मसीह की ख़ुदाई मनवाने के लिए उस की सलीबी लअनत पर ईमान लाने के लिए प्रत्येक प्रकार के बहाने और कोशिशें की जांऐगी।। अत: इन दोंनों अन्दरूनी तथा बाहरी फित्नों के सुधार के लिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को साथ ही ख़ुशख़बरी मिली कि एक आदमी आप की उम्मत में भेजा जाएगा। जो बाहरी फित्नों और सलीब की वास्तविकता को तोड़ने वाला होगा और इसी लिए वह मसीह इब्ने मर्यम होगा और भीतरी फित्नों और बुराइयों को दूर करके हिदायत की सच्ची राह पर स्थापित करेगा इसलिए महदी कहलाऐगा। इसी की तरफ وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ में भी इशारा है"

(मलुफूज़ात भाग 1 पृष्ठ 444-445 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: हमने जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को माना है हमारे अल्लाह तआला से संबंध और तक्वा की गुणवत्ता दूसरे मुसलमानों से अधिक होनी चाहिए। आपने जो सामान्य रूप से नक्शा खींचा है वह हमारा नक्शा नहीं होना चाहिए। हमारी व्यावहारिक स्थिति दूसरों की तुलना में बेहतर होनी चाहिए। हमारे कर्म हर समय हमेशा अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार और नेक होने चाहिए। अत: इस बात को वर्णन करते हुए आप फरमाते हैं:

"आदमी को बैअत कर के केवल यह नहीं मान लेना चाहिए कि यह सिलसिला सच्चा है ।"(सच्चाई को स्वीकार कर लिया काफी हो गया।) "और इतना मानने से उसे बरकत होती है।" फरमाते हैं "केवल मानने से अल्लाह तआला प्रसन्न नहीं होता जब तक कि अच्छे कर्म न हों। कोशिश करो कि जब इस सिलसिला में शामिल हुए हो तो नेक बनो। प्रत्येक बुराई से बचो। हर समय दुआओं से गुज़ारो। रात और दिन रोने में लगे रहो। जब परीक्षा का समय होता है तो अल्लाह तआला का क्रोध भी भड़क उठता है। ऐसे समय में दुआ वेदना सदका ख़ैरात करो। ज़बान को नर्म रखो। इस्तिग़फार को अपनी आदत बना लो। केवल मानना इंसान के काम नहीं आता। अगर इंसान मानकर फिर इसे भुला दे तो उस से क्या लाभ होता है। फिर इस के बाद शिकायत करनी के बैअत का लाभ नहीं हुआ व्यर्थ है। ख़ुदा तआला केवल मौखिक बातों से राज़ी नहीं होता।"

नेक कर्म की परिभाषा करते हुए कि नेक काम क्या है फरमाया कि

"कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ नेक कर्म भी रखा है। नेक कर्म उसे कहते हैं जिस में कोई कण भी उपद्रव का नहीं होता। याद रखो कि मनुष्य के कर्म पर हमेशा चोर पड़ा करते हैं। वे (चोर) क्या हैं? "(किस तरह के चोर कर्म पर पड़ते हैं?)" दिखावा (जब कोई व्यक्ति दिखावे के लिए कोई कर्म करता है। गर्व (यह कि वह कर्म कर के अपने नफ्स में ख़ुश होता है, इस को गर्व कहते हैं।) "और विभिन्न प्रकार के अपराध और गुनाह जो उस से प्रकट होते हैं उन से कर्म नष्ट हो जाते हैं।" फरमाया कि " नेक कर्म वे हैं जिस में अत्याचार, अहंकार गर्व और इंसानी अधिकारों के नष्ट का विचार तक न हो। जैसे परलोक में मनुष्य नेक कर्म से बचता है वैसे ही दुनिया में भी बचता है।" (यानी परलोक में अच्छे कर्म जो हैं उन्हीं की वजह से बचाव का सामान होगा। अच्छे नेक कर्म होंगे तो अल्लाह तआला राज़ी होगा और इनामों से नवाज़ेगा। इसी प्रकार अगर दुनिया में भी नेक कर्म होंगे तो दुनिया में भी बहुत सी परेशानियों और कठिनाइयों से इंसान बच जाता है।) फरमाया कि, "यदि कोई व्यक्ति भी सारे घर में नेक है, तो सारा घर बचा रहता है। जब तक तुम में नेक कर्म न हो केवल मानना लाभ नहीं दे सकता। अगर कोई डॉक्टर एक पर्ची लिख कर देता है तो इसका मतलब यह है कि जो कुछ उस में लिखा है उस को लेकर पीए।"(प्रयोग करे।) "यदि वह इन दवाओं का इस्तेमाल नहीं करता है और नुस्खा लेकर रख देता है, तो इसका लाभ क्या होगा। अब इस समय तुम ने तौब: की है। अब भविष्य में अल्लाह तआला देखना चाहता है कि इस पश्चाताप से तुम ने अपने आप को कितना साफ किया है। अब समय है कि ख़ुदा तआला तक्वा के माध्यम से अंतर करना चाहता है। ऐसे कई लोग हैं जो ख़ुदा तआला पर शिकवा करते हैं और स्वयं अपने नफस को नहीं देखते। मनुष्य के अपने नफ्स के ज़ुल्म ही होते हैं वरना अल्लाह तआला रहीम तथा करीम है। फरमाया कि " कुछ लोग ऐसे होते हैं कि उन्हें गुनाह की ख़बर होती है और कुछ लोग ऐसे होते हैं कि उन्हें गुनाह की ख़बर भी नहीं होती। इसीलिए अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए इस्तिग़फार का प्रावधान कराया है।" (हमेशा इस्तिग़फार मांगते रहना चाहिए।) "कि मनुष्य प्रत्येक पाप के लिए चाहे वह प्रकट हों चाहे भीतर के हों, चाहे वह जानता हो या न जानता हो और हाथ और पैर, और जीभ और नाक, कान और सभी प्रकार के पापों से इस्तिग़फार करता रहे। "(अर्थात कोई भी चीज़ इस प्रकार नहीं होनी चाहिए, ऐसा कर्म न हो या शरीर का इस प्रकार से प्रयोग न हो जिस से गुनाह हो सकता है इसलिए इस्तग़िफार करते रहो ताकि गुनाहों से बचा रहे) आज कल आदम अलैहिस्सालम की दुआ पढ़नी चाहिए" (और वह दुआ क्या है)

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ(अल-आराफ: 24)

यह दुआ पहले ही स्वीकार हो चुकी है। लापरवाही से जीवन मत व्यतीत करो। जो आदमी लापरवाही से जीवन नहीं व्यतीत करता हरगिज़ उम्मीद नहीं कि वह किसी ताकत से बढ़ कर बला में पड़े।"(अर्थात अल्लाह तआला के भय से जीवन व्यतीत करने वाला कभी बहुत अधिक मुश्किलों और मुसीबतों में पीड़ित नहीं होता।) फरमाया कि" कोई बला बिना किसी इरादे के नहीं आती जैसे मुझे यह दुआ इल्हाम हुई "رَبِّ كُلُّ شَيْءٍ خَادِمُكَ رَبِّ فَاحْفَظْنِيْ وَانْصُرْنِيْ وَارْحَمْنِيْ फरमाते हैं कि" हमारा ईमान है कि सब उस के हाथ में है चाहे माध्यम के द्वारा करे या बिना माध्यम के।" (मलुफूज़ात भाग 4 पृष्ठ 274-276 प्रकाशन 1985 ई यू.के) अल्लाह तआला कोई माध्यम बनाता है या नहीं अल्लाह तआला के हाथ में सब कुछ है इसलिए ये दोनों दुआएं पढ़नी चाहिए। इस पर ध्यान दें और इसे समझें।

अत: हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि अगर हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को स्वीकार किया है तो क्या इस स्वीकार करने और बैअत करने का हक भी अदा करने वाले हैं? प्राय: मेरी समीक्षा में यह बात मैंने देखी है यह बात सामने आती है कि हम में से कई एसे हैं जो नमाज़ें भी पूरी तरह अदा नहीं करते। नमाज़ों की तरफ ध्यान नहीं है। इस्तिग़फार की तरफ तो बहुतों का बिल्कुल ध्यान नहीं है। एक दूसरे के अधिकारों को अदा करने की तरफ ध्यान नहीं है। यदि यह अवस्था है तो हम किस प्रकार कह सकते हैं कि हम नेक कर्म करने वाले हैं। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक अदा करने वाले हैं। दूसरे न मान कर गुनाहगार हो रहे हैं। जिन्होंने नहीं स्वीकार किया वे गुनाहगार हो रहे हैं। और हम मान कर फिर अपनी अन्दरूनी तब्दीली न पैदा कर के, एक वादा कर के इस को न पूरा कर के गुनाहगार हो रहे हैं। अत: बहुत फिक्र से हम में से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला करे कि हम केवल रस्मी तौर पर मसीह मौऊद को मानने वाले न हों बल्कि मसीह मौऊद को स्वीकार करने का हक अदा करने वाले हों और प्रत्येक प्रकार के भीतरी और बाहरी फित्नों से बचने वाले हों। अल्लाह तआला हमेशा हमें अपनी पनाह में रखे और प्रत्येक बला और मुसीबत से बचाए।

आज एक घोषणा यह भी है और ख़ुशी की ख़बर भी है कि समाचार पत्र अल-हकम जो कादियान से निकला करता था और फिर उसका दोबरा प्रकाशन 1934 ई में शुरू हुआ था। फिर बंद हो गया। आज अंग्रेज़ी में, यहां से जारी किया जा रहा है और आज भी मसीह मौऊद दिवस भी है यह अख़बार जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना का पहला अख़बार था, यह प्रिंट में तो थोड़ा आएगा परन्तु इन्ट्रनेट पर उपलब्ध होगा और ख़ुत्बा के शीघ्र बाद इस वेब साइट www.alhakam.org पर भी उपलब्ध होगा। जो इंटरनेट पर डाउनलोड और पठनीय होगा। यह ऐप जो है प्रसिद्ध फोन एप्पल और एंड्रॉइड (एंड्रॉइड) जैसे अग्रणी मोबाइल फोन सिस्टम में डाउनलोड करने के लिए ख़ुत्बा के तुरंत बाद उपलब्ध होगा। इस बार का जो अंक है। यह मसीह मौऊद दिवस के हवाले विशेष अंक है और भविष्य में हर शुक्रवार को अपलोड हो जाता करेगा। और यह प्रिंट में थोड़ा कम होगा। बहरहाल लोग इससे लाभ उठा सकते हैं। अल्लाह तआला करे अब इस बार जो यह जारी हुआ है वहा हमेशा जारी होने वाला हो और क्योंकि यह अंग्रेजी भाषा में होगा इसलिए अंग्रेज़ी वर्ग को इससे अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad